वेद ईश्वरीय वाणी

वर्ष : 12 अंक: 2 अक्तूबर 2022 – मार्च 2023 अर्द्ध–वार्षिक

ओ३म्

केवल वेदों में वर्णित ईश्वर की पूजा करें

ओ३म्

''न किष्टं कर्मणा नशद्यश्चकार सदावृधम्।
इन्द्रं न यज्ञैर्विश्वगूर्तमृभ्वसमधृष्टं धृष्णुमोजसा॥''

(सामवेद मन्त्र 243)

हे मनुष्यों! ***(यः)*** जो पुरुष ***(विश्वगूर्तम्)*** सबका पूजनीय ***(सदावृधम्)*** इस प्रकार सदा भक्तों की वृद्धि करने वाले ***(ऋभ्वसम्)*** सबसे महान् ***(ओजसा)*** अपने अनन्त बल से ***(अधृष्टम् न)*** जिससे बड़ा कोई ना हो ***(धृष्णुम्)*** सब पर अधिकार करने वाले ***(इन्द्रम्)*** परमेश्वर को, जो ***(यज्ञैः)*** यज्ञों के द्वारा ***(चकार)*** उपासना करता है ***(तम्)*** उस साधक को कामादि शत्रु ***(कर्मणा)*** किसी भी कर्म द्वारा ***(नकिः नशत्)*** नहीं व्यापता अर्थात् उस साधक को कोई कर्म–बन्धन नहीं होता।

भावार्थ– ईश्वर प्राप्ति में मनुष्य के सबसे बड़े शत्रु काम, क्रोध, मद, लोभ एवं वेद विरुद्ध इच्छाएँ आदि हैं। मन्त्र में स्पष्ट ज्ञान है कि जो साधक वेदों में वर्णित केवल एक निराकार ईश्वर की वेद–मन्त्रों द्वारा पूजा करता है, उसे कामादि शत्रु किसी भी प्रकार से नहीं सताते।

WORSHIP ONLY ONE GOD DESCRIBED IN VEDAS

Rigved states that there is only one God to be worshipped. To fulfil the said purpose, in the beginning of every creation, God gives birth to human beings along with knowledge of four Vedas, to worship only one God and none else.

वेद ईश्वरीय वाणी

मुद्रक, स्वामी एवं प्रकाशक: राज कुमार गुप्ता

संपादक: स्वामी राम स्वरूप 'योगाचार्य' (01892236107)

सह संपादक: साध्वी गीतांजली (01892236107)

उप–संपादक: सुप्रिया गन्दोत्रा (9906092521)

''वेद ईश्वरीय वाणी''

प्रकाशन: शिवा एन्कलेव, लेन नं. –3, रूप नगर, जम्मू – 180013 (जम्मू व कश्मीर)

डी.डी. स्प्रिोग्राफिक्स

3–एकता आश्रम न्यू रिहाड़ी, जम्मू –180005 (जम्मू व कश्मीर) से मुद्रित

ओ३म्

विषयानुक्रमणिका

ओ३म्

- केवल वेदों में वर्णित ईश्वर की पूजा करें 1
- संपादकीय – गुरू परंपरा ..... स्वामी रामस्वरूप, 'योगाचार्य' 3
- Ten Commandments ..... Sadhvi Geetanjali 6
- योग समाधि ..... स्वामी रामस्वरूप, 'योगाचार्य' 11
- His Names ..... Anoo Malhotra 12
- मेहनत की कमाई ..... ऋचा कौशिक 22
- श्रीमद्भगवद्गीता – एक वैदिक रहस्य ..... स्वामी रामस्वरूप, 'योगाचार्य' 25
- Respect ..... Seema Sharma 33
- गुरू–शिष्य संवाद ..... स्वामी रामस्वरूप, 'योगाचार्य' 35
- Correspondence between Swami Ji & S. Khushwant Singh Ji 39
- पति के कर्तव्य ..... शीतल गुप्ता 50
- Forgiveness ..... Sapna Dogra 52
- कैसे बुराइयों से छूटें ..... अंजना दीवान 54
- Flax Seeds ..... Sugandh 'Sudhi' 59
- वेदानुसार कर्म... यजुर्वेद मं. 40/2 ..... स्वामी रामस्वरूप, 'योगाचार्य' 62
- पौर्णमासी और अमावस्या.... तिथियाँ 63
- Medical Science in Atharvaved ..... Swami Ram Swarup 'Yogacharya' 64
- Subscription Form

NOTE : Writers are responsible for their own articles

संपादकीय

गुरु परंपरा

यह कितना कटु सत्य है कि यदि माता–पिता जन्म धारण किए गए बच्चे को बोलना ना सिखाएँ तो वह बालक बोल भी नहीं सकता। इसलिए प्राचीनकाल से ही यह सत्य कहा जाता है कि बच्चे की प्रथम गुरु उसकी माता है। परन्तु वेद ज्ञान यदि माता और पिता को नहीं है तब तो माता भी बालक की विद्या दान की गुरु नहीं मानी जाती क्योंकि विद्या वेद है। ***वेद का ज्ञान विद्या का ज्ञाता, माता हो, पिता हो अथवा अन्य ऋषि–मुनि हो, केवल वही दे सकता है।***

कहते हैं कि गुरु बिना ज्ञान नहीं होता; यह सत्य है। परन्तु हमारा गुरु कौन है, जिसके बिना हमें ज्ञान नहीं होता। इसका उत्तर वेद–शास्त्र सुनकर ही ज्ञात होता है। जैसे ऋषि–मुनि कहते हैं कि जब सृष्टि बनती है, उस समय ईश्वर सृष्टि की रचना करता है, ईश्वर प्रत्येक मनुष्य अथवा प्राणी को जन्म देता है। उस समय प्रत्येक नर–नारी ज्ञान–विहीन होते हैं।

नई सृष्टि में कोई मनुष्य का गुरु नहीं होता तब सर्वप्रथम गुरु के रूप में स्वयं परमेश्वर ही चार ऋषियों को, अपनी सामर्थ्य से, अलग–अलग चार वेदों का ज्ञान देता है। क्योंकि ईश्वर सर्वशक्तिमान् है, वो चाहता है कि उन चार ऋषियों को यह ज्ञान याद हो जाए तो फलस्वरूप उन चार ऋषियों को, चारों वेदों का ज्ञान मुँह–जुबानी याद हो जाता है। ***ऋग्वेद मन्त्र***

10/181/1,2 में ईश्वर ने प्रमाण दिया है कि ब्रह्मा नामक विद्वान् ने चारों ऋषियों की सेवा करके चारों वेद मुँह–जुबानी याद कर लिए। यहीं से गुरु परंपरा प्रारम्भ हुई क्योंकि ब्रह्मा ने आगे अपने शिष्य बनाए और उन्हें वेदों का ज्ञान देता चला गया, इत्यादि। वेदों का गूढ़ मनन करने वाले ऋषियों में ***पताञ्जलि ऋषि*** हुए हैं जिन्होंने बहुत गहराई से वेदों पर विचार करते हुए इस सत्य को अपने ***योग शास्त्र सूत्र 1/26*** में यह कह कर समझाया है कि ***परमेश्वर जन्म–मृत्यु से परे है*** इसलिए हर सृष्टि बनने पर वह चार ऋषियों को वेद का ज्ञान देता है। अत: ऋषि ने सूत्र में कहा कि ***परमेश्वर चार ऋषियों का गुरु है*** और ***उसके बाद चार ऋषियों से ज्ञान लेकर ब्रह्मा नामक ऋषि मनुष्यों के गुरु हुए जो बाद में ऋषि कहलाए।*** ईश्वर निराकार है इसलिए ईश्वर ने बिना कागज़ आदि पर लिखे और बिना बोले यह वेद का ज्ञान, अपनी सामर्थ्य से चार ऋषियों के अन्दर प्रकट किया। तत्पश्चात्, जैसे ऊपर कहा, चार ऋषियों की सेवा करके, ब्रह्मा ने उनसे, यह चारों वेदों का ज्ञान मुँह–जुबानी याद कर लिया। ब्रह्मा से ही आगे गुरु–परंपरा चली। ***व्यास–मुनि ने मनुष्यों पर कृपा करके, ये वेदों का ज्ञान, जो उन्हें गुरु–परंपरा से मुँह–जुबानी याद था, उसे भोज–पत्र पर लिख दिया। यह वेद का ज्ञान, उन्होंने लिखकर पूर्णिमा के दिन समाप्त किया था।***

पूर्णिमा के दिन ही, उन्होंने एकान्त वास में वेदों को लिखकर, शिष्यों को दर्शन दिए थे। क्योंकि यह शुभ दिन पौर्णमासी का था फलस्वरूप व्यास जी के शिष्यों ने इस शुभ दिन का नाम ***''व्यास पूर्णिमा''*** रखा और अपने ऋषि व्यास जी की पूजा–अर्चना की थी। उन दिनों गुरु नाम विख्यात नहीं था। ऋषि मुनि, योगी–तपस्वी, प्राय: यही नाम विख्यात थे। परंतु समय के बदलाव के साथ मनुष्यों ने संस्कृति में भी बदलाव करना प्रारम्भ किया और व्यास–पूजा का दिन गुरु–पूजा रख दिया। अत: वेद–शास्त्रों के गहन अध्ययन से यही सत्य निकलता है कि ***ईश्वर ही चार ऋषियों का प्रथम गुरु है और उन ऋषियों से ज्ञान लेकर ब्रह्मा ने गुरु परंपरा चलाई और वेदों के ज्ञान को फैलाया।*** यह ज्ञान महाभारत काल तक लगभग ठीक चला परंतु उसके पश्चात् मनुष्य, किसी भी कारण से, वेदों को भूलते चले गए और अब तो तुलसी जी ने भी कहा है–

''श्रुति संमत हरि भक्ति पथ संजुत बिरति बिबेक ।
तेहिं न चलहिं नर मोह बस कल्पहिं पंथ अनेक ।।''

(उत्तरकाण्ड –100(ख))

स्वामी रामस्वरूप 'योगाचार्य'
मुख्य सम्पादक
वेद मन्दिर, योल (हि.प्र.)

Sadhvi Geetanjali
Ved Mandir, Yol

10 Commandments

He who lives in harmony with himself lives in harmony with universe.

But what is happiness except the simple harmony between a man and the life he leads. Ideal way to lead life needs to be explored in Vedas- divine voice of God and other beautiful literary works of Rishis like ***Manusmriti, Mahabharat, Shastras*** (to name a few). Now, aggressive atheists who deny the existence of God do so because believers have been committing horrible acts of omission and commission in the name of religion and God. Despite this, it is stated ordinarily that so-called all-powerful, omnipresent God remains silent. Therefore, God's silence is equated with God's non-existence by materialists and atheists. This is only due to the effect of illusion, in the absence of eternal, Vedic knowledge. However, the wonderful structure of universe and things and beings in the universe, imply existence of none else than God, who pervades entire universe including each and every heart.

Manusmriti shloka 6/92 directs Ten Commandments or ten signs (characteristics) of Dharma which needs to be incorporated by everyone in their lives to achieve eternal bliss and peace of mind. Hence, ***those who follow the path of dharma should cultivate ten characteristics of dharma within.*** Idea of ***Manusmriti*** is that those who imbibe the said ten signs of dharma in their daily lives, are the one's who shall be called

religious. So, we have to achieve the same. ***The shloka is as follow-***

"Dhritihi Kshama Damoasteyam
Shauchumindriyanigrahaha,
Dheervidya Satyamakrodho
Dashkum Dharmalakshannam."

Dhriti is the **first** characteristic to become morally upright and it implies patience.

Second is **Kshama** which means forgiveness. Each and every action produces an equal and opposite reaction. Suppose someone has started doing some mischief by hurting us mentally or physically. This action will certainly have a reaction. When the time comes for us to take revenge, we should not express any reaction ourselves. In this way, we will break the continuity of chain. The point at which the cycle of action and reaction stops due to our initiative is called forgiveness.

Third aspect of dharma is **'Damaha'.** This is the stage of achieving control over mann (mind) and its five senses, having debasing propensities.

Fourth is **Asteya** which literally means not to steal anything mentally or physically. It extends to not to steal articles or even ideas originally belonging to others.

Fifth sign of dharma is **'Shauch'** which includes both external and internal cleanliness. External cleanliness refers to body, clothes and surroundings while internal cleanliness includes washing away from within the vices like sensuality, greed, anger, pride, ego etc. This makes us capable to block

ourselves from entering of any bad thought within us.

Sixth feature of dharma is **Indriya-Nigraha-** There are ten indriya or organs- five sensory and five motor. As they exercise control over physical activities, they are called **'indriya' meaning "dominating entity".** Subtler soul is superior to these organs and it is imperative for soul to make these organs subservient to him through meditation, yajyen and preach of learned acharya and direct them only in pious activities. So, to control all the indriyas is called indriya-nigraha.

Seventh characteristic of dharma is **"Dhi"** which means **"pure and benevolent intellect".** If human intellect is not channelized well, it becomes destructive, then the same corrupts and exploits the society. So, pure intellect is achieved through sincere exercise of Yam, Niyam, performance of Yajyen, Ashtang Yog sadhna under the expert guidance of learned acharya of Vedas. So, one should be knowledgeable/wise.

Eighth feature of dharma is **Vidya** i.e., **complete knowledge.** Knowledge from straw to Brahma, enshrined in Vedas, should be acquired by aspirant to lead a life having inherent knowledge to overcome illusion. One, who has realized the truth, possesses vidya.

Ninth feature is **'Satya'/Truth** which is to be observed in individual and collective lives. It includes to have an understanding and true concept of everything according to Vedas; to think, speak and act in absolutely true manner.

Tenth and final character is **Akrodh** or non-anger. One should not

be swayed by anger. Infact, Maharaj ji **(Yogacharya, Swami Ramswarupji Maharaj)** says that he who befriends anger does not require to make enemies. He shall be destroyed completely by this dangerous hidden foe.

To achieve all the ten features of dharma (righteousness) one needs to remain in proximity (close contact) with learned acharya of Vedas and Ashtang Yoga, who himself wields all these ten signs/characters naturally. Besides, the acharya guides and inspires the devotee to do yajyen, practice of Ashtang Yoga, Swadhyaya and innumerable pious activities to cultivate these characters of righteousness in the inner fabric of devotee.

Further insight by the Editor

Dhriti- Manusmriti states about religious person. It defines that he is the religious person who has acquired in his life the ten divine qualities, by way of listening to Vedas and doing practice of Ashtang Yog. We must know, first thing is Shabda Brahma i.e., literal knowledge of Vedas or we can say the knowledge collected by a person through study of literature etc. If so, then the said knowledge is of no use because it will not be observed in our daily life, in the absence of listening Vedas and command on intellect/mind through the Vedas and practice of yoga philosophy.

We will have to know the fact that intellect and mind are controlled by listening to Vedas and doing practice of ashtang Yoga under the guidance of acharya. This fact can never be denied. No doubt, first of all, an aspirant will have to try to mould his mind forcibly but the result which he gets to control his mind will be insignificant. For example-

Maharana Pratap had to take shelter in jungle owing to his defeat in battle. He possessed the quality of Dhriti ***"patience"*** at that time, based on literal knowledge/guidance etc. But when he saw the scene of hunger and his family was forced to take the chapati of grass, his patience broke down and he became ready to compromise. However, at that time, the rich person

Bhama Shah appeared before him and gave all his assets to create a new army to fight against enemy. On the other hand, we see ***Sri Ram, Mata Sita*** and several dignitaries who were in contact with Rishis, Vedas and did practice of Ashtang Yog did not loose patience in any circumstance. So, this applies to all ten religious qualities, quoted by **Sadhvi Geetanjali.**

Dhriti means to wield patience in any circumstance, whether the kingdom/assets are retained or not. Because in the absence of patience, no one can follow dharma. (Here, we must know that dharma means to do Vedic pious deeds- Manusmriti shloka 2/6, Bhagwad Geeta shloka 3/15 refers).

Kshama to bear. When a powerful person forgives the Culprits.

Dam means to have control on mind and its senses.

Asteya Without permission, not to take anyone's money/articles.

Shaucha To keep the body clean with daily bath etc., is external cleanliness and not to allow entering of bad thoughts in mind is internal cleanliness.

Indriya Nigraha To have control over all indriyas (senses, perceptions, mind and intellect).

Dhi should give power to the intellect as well as physique. Intellect gets power by gaining Vedic knowledge and body gets power by maintaining Brahmacharya. Both mental as well as physical powers are essential.

Vidya means self experience. In Vidya, there remains no misunderstanding whereas in avidya, there always remains misunderstanding.

Satya In mind, in deeds, in speech there should always remain truth. This is Satya. So, we should leave falsehood.

Akrodh Should control anger.

TEN COMMANDMENTS

VIV

योग समाधि

अष्टांग योग विद्या जहाँ ईश्वर प्राप्ति में सहायक है वहीं यह सब अंगों को दृढ़, स्वस्थ एवं निरोग बनाती है। इससे भोजन भी बहुत अच्छी प्रकार से पच जाता है। योग विद्या के विषय में पताञ्जल योग दर्शन में ऋषि ने कहा है–

''अथ योगानुशासनम्'' (योग शास्त्र सूत्र 1/1)

ऋषि पताञ्जलि इस सूत्र द्वारा समझा रहे हैं कि अब परंपरागत योग विद्या प्रारम्भ करते हैं। परंपरागत का अर्थ है कि अनादिकाल से चली आ रही, वेदों में जो योग विद्या है, उसकी व्याख्या प्रारम्भ करते हैं।

योग समाधि को कहते हैं और समाधि सब अवस्थाओं में चित्त का गुण है। अत: जब किसी का योग सिद्ध होता है अर्थात् साधक जब समाधि अवस्था को प्राप्त कर लेता है तब खाते–पीते, उठते–बैठते, सोते–बोलते, इन सब चित्त की वृत्तियों में वह समाधि अवस्था में ही रहता है। यह बहुत बड़ी बात है।

इस विषय में ***श्रीमद् भगवद् गीता श्लोक 2/55*** में श्री कृष्ण महाराज ने थोड़ा प्रकाश डाला है कि जब साधक मन में उठने वाली सब इच्छाओं को अच्छी तरह से त्याग देता है तब ही वह साधक आत्मा के द्वारा ही आत्मा में संतुष्ट हुआ, ब्रह्म में स्थिर बुद्धि वाला समाधिवान् पुरुष कहलाता है। अर्थात् समाधिस्थ पुरुष संसार के किसी पदार्थ आदि से संतुष्ट नहीं होता क्योंकि वह समाधिस्थ जीवात्मा स्वयं (आत्मा) के द्वारा ही स्वयं (बिना किसी अन्य पदार्थ के) संतुष्ट रहता है। आज योग विद्या की साधना करने वाले योगी दुर्लभ हैं। ऋषि कहते हैं–

''योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः''

अर्थात् योग साधना द्वारा जब चित्त की वृत्तियों का निरोध हो जाता है, उसे योग कहते हैं। अत: वज्र आसन, सिद्धासन, पद्मासन, प्राणायाम आदि रूपी ब्रह्म विद्या को आचार्य से ठीक प्रकार से समझें और उसका नित्य अभ्यास करें। सत्य यही है कि सत्य मार्ग पर चलने वाले साधक आचार्य से ज्ञान लेकर वेद–शास्त्रों में वर्णित अष्टाँग योग विद्या का कठोर अभ्यास करते रहें। यही जीवन का लक्ष्य है–ध्येय है।

स्वामी रामस्वरूप 'योगाचार्य'

Anoo Malhotra
JKAS
Director Industries & Commerce
Jammu (J&K)

While I start with this article I am reminded of Shakespeare's words in his legendary play "Romeo and Juliet ", wherein he says ***"what is in the name?"*** To some extent his words are true when it comes to the worldly things and creations of almighty.

Of course there is nothing, absolutely nothing in our names because we originate from single creator and whatever caste, colour, creed, nation, ethnicity, race, gender we may belong to; the single common factor binding us all together is that we are all his creation and our individuality and nomenclature hardly alters the reality, but it surely is a matter of concern when we talk about HIS NAMES.

It is only HIS NAMES which are of significance, and if at all names are to be understood and known, try to know what is there in HIS NAMES.I am here referring to none other than the ***one and only almighty in whose comparison no one stands.***

I have often heard from my Learned Archarya ***'Swami Ram Swarup 'Yogacharya'*** the following words which keep echoing in my mind and heart and every time his words cross my mind and heart they give me shivers.

The words are

''NA JAATAH NA JANISHYATE"

which means that neither any one was ever like Him in the past nor

anyone is like Him today nor anyone would ever be like Him in future (uske jaisa na koi tha, na hai aur an kabhi koi hoga).

Yes ! here I am referring to the one and only who is comparable to none, the creator, the destroyer ,the omnipresent, the omniscient, the efficient , the knowledgable, the peerless, the fearless, the merciful .

Its high time that we realise that everything revolves around HIS names which have indepth meanings and these meanings are hard to understand because the Creator is Himself hard to understand. Tell me have we not since childhood heard that God is omnipresent and we all are under the impression that we actually know God is omnipresent but then what for we go to temples, mosques and tirathsthals and other places to find him and attain Him?

Similarly all of us know literally that God is the creator, then why do we confuse ourselves by believing and worshipping devta brahma whose idols are found in various temples depicting him as creator, then why Shankar bhagwan is known to be the destroyer ?

Can there be two or more creators ?

Can there be two or more destroyers ?

Please donot under estimate HIM and HIS powers by showing his images with 100 hands ! He doesn't need even a single hand to run this world . I pray to the world not to undermine HIS authority. HE doesn't need eyes, HE doesn't need

head, HE works without limbs. HIS shapelessness and formlessness is HIS only identity. Many of us including me can proudly say that we very well understand the vedic verse

" Na Tasya Pratima Asmi "

which means that he has no shape (uski koi pratima nahin hai). But do we really believe that HE is formless. High time !! Lets Check ourselves, Introspect and try to actually believe in this. Meaning of the verse is clear but understanding and embibing this fact is still not clear to the world. Worshipping idols of God having head, nose, eyes, ears, arms, legs, ***Does it not mean demeaning his authority and power?***

- **Does the almighty require eyes to see you ?**
- **Does HE need arms to do his job ?**
- **Does HE need ears to listen ?**
- **Does HE need legs to wander ?**

No HE doesn't !

HIS power is so immense, immeasurable and unfathomable that HE is everywhere at all times. HE doesn't take birth nor does HE die. HE is immortal. No one has the power to create HIM. HE himself is the creator and HE was still there when there was no creation. So if we really believe HE is formless, then where are we looking for HIM. We need to attain and manifest this formless one within ourselves.

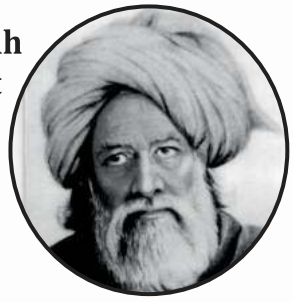

I am reminded about the kalaam of great **Bulleshah Sufi** mystic who spent his life explaining to this world that going to different places doesn't matter at all, what matters the most is that burn your ego and ahamkaar and then HE will be yours.

Makke gayan gall mukdi naahi ,
Ganga gayaan gal mukdi nahi,
Gaya gayaan gal mukdi naahi,....

If possible ponder over the words of great **Yaari Faquir** when he says

Birhan mandir diya na baal
Bin baati bin tel jugat so
Bin Deepak ujiyaar

HIS words definitely hint towards the fact that the immortal light lies within you and your lighting of diyas and candles will not help you in attaining HIM. Keeping these basic characteristics of HIM in mind, I would like to spell out a few of HIS names describing HIS qualities. It is also high time that we realise that HE cannot be addressed by any name you are fond of or any name which suits you.

Vedas recognise two vaanis **ITHA** and **ITRA** and Only such names as enshrined in Vedas depict the true characteristics and qualities of God-the creator, and it is my utmost desire to tell this world what do these Names and references actually mean. Continuous listening of Vedas from my Yogacharya has inspired me to attempt at enlisting some of HIS names from the four Vedas.

My Acharya's teachings have given me the courage to bring these secrets out. This is a small service and a very small attempt from a small person like me to lift the veils of darkness and ambiguity. I wish that the ultimate truth is seen by all. Please break the shackles of knowledgelessness; untie the knots of wrong beliefs, come upto the expectations of almighty as he wants His beings to follow the right path which He Himself has laid down in Vedas which are as true , as pure and as pious as He is. I would like it to invite your attention to the fact that the similar Sanskrit words figuring in various vedic mantras may have different connotation each time they figure. For example word Surya may mean Sun at one place and it may mean God at other places depicting the omnipresent quality of God.

It is pertinent to mention here that I am elaborating only such facts which till date I have learnt under the guidance of my learned Acharya. I may not have been able to elaborate each and every connotation for which you can forgive a learner like me who is at a very nascent stage of learning. Here it would be worth sharing the words of ***Maharishi Kashyap*** who after studying Vedas for ***300 years*** surrendered by declaring following words

" ANANTA VAI VEDAHA "

Meaning thereby that ***Vedas are endless and infinite.*** The knowledge in Vedas has neither the beginning nor any ending , so it is impossible for a person like me to have complete knowledge of the

"ANADI AND APAURUSHeYA VEDAS"

which are eternal and supra-human.

HIS VEDIC NAMES

AUM

This divine word refers to the Almighty GOD and clearly means that he is the ***"one who protects".*** This word is derived from the Sanskrit word ***"AV RAKSHANE"*** (hindi), which means ' the protector '.

This divine word comprises of three letters **'A , U** and **M'**

A which means 'Akar'. Three names can be derived from this and they are

Viraat... This means the one who illuminates all the created things.

Agni... This connotes the quality of GOD meaning thereby that he is the embodiment of knowledge, he is omniscient and worthy to be understood, worshipped and known.

Vishwa... this means that he is all pervasive and he is within all created things.

U means 'Ukar'. Three names of GOD can be derived from this and they are

hiranyagrarbaha.... This means that he is the origin of all celestial and heavenly bodies emitting light like sun , moon, planets , stars. That he is the base of all the said matter and it is from him that all the matter originates.

Vaayu.... This means that he is the base of all alive and non alive matter. HE is omnipotent and most powerful of all, HE is almighty that is why HE is also called VAYU.

Tejas.... Who is self enlightened and even gives light to other planets, thats why HE is tejas.?

M means 'Makar'. Three names can be derived from this and they are

Eeshwar... Whose knowledge is true and unlimited and is the embodiment of divine pleasure

Aditya... Who is indestructible thats why HE is Aditya.

PRAGYA.. Who is the storehouse of knowledge . He possesses Knowledge of every matter of the world and his knowledge is undoubtful.

AGNI

There are two kinds of Agni, one is the wordly agni which is also called fire but do you know that this Sanskrit word also depicts the characteristic of ever present God meaning thereby that HE is the First one and none originated before HIM. This word is formed from the Sanskrit root word **Ag Agrini** which means **"ahead of all"**. This means his arrival time is not known. This also hints at the fact that HE has never vanished and has always been there. There is no time when HE disappears and the universe is never devoid of HIM. HE is present before the creation, at the time of creation and will be present after the creation.

Agni also means who is ***storehouse of knowledge,*** one who knows everything of all the worlds. It also means who is worthy of being worshipped. The word Agni at some places also refers to ***learnerd acharya or vidwaan*** who is the Store house of knowledge. This word is to be understood as per the connotation of mantra in that very phrase as it appears in Four Vedas. E.g in the ***First mantra of Rigveda***

'agnim eede purohitam .....'

the word agni means the one before whom no one came .

Similarly in **Rigved Mantra 1/31/16,** The word **Agni means learned Acharya** who has the capacity to bear every one and every situation .

SHIV

Means the benevolent **(Ishwar wo hai jo sab ka kalyaan karne waala hai)**. It is the quality of GOD that HE takes care of his beings and does well to them. Confusing this vedic word with bhagwan Shankar is not the intent of Vedas because ***Shankar bhagwan also worshipped the one and Only God***

referred in Vedas. It is worthwhile mentioning here that Vedas donot refer to any proper noun. e.g when Vedas refer to the word ganga it means such river which originates from mountains. Another example i would like to quote here is that in some verses you will come across the words ***Amba, Ambika*** and ***Ambalika*** which means ***Mother, Grandmother*** and ***Great grandmother.***

VISHNU

This word depicts ***vishlesh vyapta*** i.e. ***omnipresent.*** This word does not depict any human. It is the divine quality of God and does not refer to any incarnation of God.

BRAHMA

This means who is the greatest of all and no one is equivalent to HIM.
Some of HIS NAMES spelt above describe the define and ultimate qualities of HIM.
We surely need to know that

- ❖ HE is devoid of any shortcoming
- ❖ HE is a complete package, from WHOM originates the complete world, and
- ❖ HE nourishes and nurtures this world without making any mistakes.
- ❖ Which fact indicates that HE is the one who is the storehouse of all knowlaedge and HE is the master of the masters.
- ❖ HE is SARVAGYA (EVERLASTING) and HIS creation is ALPAGYA (SHORTLIVED).
- ❖ HE is the DRISHTA (OBSERVER) of Present, past and future.
- ❖ HE is free of all Karmas.
- ❖ HE is Chetan (LIVE).

No human, howsoever knowledgeable, can become 'HIM' but yes, we humans have been blessed by HIM ,with a unique quality which other creatures donot possess.

It is only the humans who have the capability to **'ATTAIN HIM IN SAMADHI'** and follow the footsteps of great yogis like Shri Ram Chandra ji , Shri krishan maharaj ji, Shri Shankar bhagwan ji, Shri Vyas muni ji, Shri Bhardwaj rishi ji , Shri Sandeepan rishi ji and many more (even i know one such Yogeshwar) in whom HE manifested and blessed them with the divine knowledge and absolved them from the circle of birth and rebirth to attain the

ultimate **'MOKSHA'.**

Do you know that the only key to achieve and attain this stage is by following the righteous path of Vedas, by loving, respecting and thanking the one and only and last of all remembering him by reciting his names and remembering his divine qualities while doing yagya and silently meditating (to be learnt from a learned acharya) while concentrating on HIS NAMES (with meanings), while breathing (pranayam) and such names as enshrined in Vedas which are HIS voice, concentrating on his eternal qualities and thanking him for all he has given us and done for us .

This beautiful verse written by an unknown poet and often sung by my learned Acharya can rightly explain the motto of humans

"HAR SAANS MEI HO SIMRAN TERA
AISA BANA DE PRABHU JEEVAN MERA"

In this article I take the courage to refer to these names only. This annotation is just the beginning which my raw mind has been able to decipher under the guidance of my **Yogacharya Swami Ram Swaroop Ji** who has always helped me to decode the light in the abyss of darkness. May GOD give me enough courage and strength to continue to throw light on some more names from HIS infinite names in the forthcoming write-ups.

Further insight by the Editor

Daughter Anu has raised a serious matter regarding the names of Almighty God. Time and again, in every matter, we have to throw light on creation because creation by God, further throws light over every matter for the benefit of human-beings.

So, Being Almighty, God in His capability/power Creates universe, nurses and after more than four Arab years, destroys it; then again creates the universe and process goes on being eternal and everlasting. Here, I would like to make dear readers understand two Vedic words, out of which first word is eternal in Sanskrit ***Anadi i.e. whose beginning and ending does not exist.***

Second is ***Aadi*** i.e. having beginning i.e. when a creation is destroyed and after the final destruction period gets over, next creation starts; ***that starting point of time is called aadi.*** So, in the aadi, when creation starts, knowledge of four Vedas emanates from God and is originated in the heart of four Rishis. The said Vedic knowledge was given to the four Rishis neither in writing nor verbally because God is Formless- ***Yajurved mantra 32/3 and Sankhya Shastra sutra 5/48 refer.***

So, the matter raised by dear daughter Anu, about the names of God relates to creation. When creation starts, in the four vedas, God preaches His innumerable, divine, eternal and everlasting names, as is also mentioned in ***Rigved mantra 1/164/46-***

"Ekam Sadvipraha Bahuda vadanti".

The idea of the above mantra is that ***in the universe, only one immortal God exists but His names are innumerable*** such as agnim, yamam etc. Mantra explicitly states that the truth[God] is ONE but His names are unlimited based on His divine qualities, deeds and nature/principles which only learned of Vedas recite. So, until and unless we make contact with learned Acharya of Vedas, how would we know the divine names of God, which cannot be made by human-beings.

For example-Name of God is Narayan.
Why? because, Narayan means **"Nar+Ayan".** Nar means public and ayan means house. So, the power which exists in the public as well as in the universe is called God.
See that ***Yajurved mantra 40/17 states - "Om Kham Brahma".***
Here the name of God is ***Kham i.e. Who is everywhere*** and God's name is ***Brahma i.e. Who is the greatest of all*** and Who protects us.
i.e. Why God's name is OM. So, the names of God are innumerable, based on His divine qualities, deeds and nature/ principle.

Samved also preaches us about real worship of God; states in ***Mantra***

1799, to do daily agnihotra/Yajyen etc., listen Vedas from learned Acharya. Mantra further states that Oh! God, I am unable to understand your most secretive and difficult/hardest ved vanni. But I recite/chant your extra-ordinary pious name and thus get satisfaction.

However, it is unfortunate that after Mahabharat period, the people have oversighted the Vedic knowledge for one or the other reason and even according to the Tulsikrit Ramayan,

"SHRUTI SAMMAT HARI BHAKTI
PATH SANJUT BIRATI BIBEK.
TEHIN NA CHALHIN NAR MOH BAS,
KALPANHIN PANTH ANEK."

[Uttarakand, Doha 100(KH)]

Meaning: Tulsi states that there is an eternal and everlasting worship based on Vedas, which gives us ascetism and factual knowledge.

But the people are not following the path of Vedas due to attachment (attachment with materialistic articles, pomp and show and family etc.) And the people have made their own new several paths of worship.

Therefore, each and every name of God mentioned in Vedas, has its own meaning. On the other hand, we have made His names at our own mostly having no Vedic meaning and if there is meaning, that does not apply to Almighty God.

My daughter, Anu, has also explained the Supreme name of Almighty God- ***Om, which is made from Av-rakshanney dhatu i.e. Om protects everybody, if we chant it daily.*** VIV

मेहनत की कमाई

ऋचा कौशिक
इंजीनियर *(बी.टैक.)*

एक धनी पिता ने अपने निखट्टू बेटे से कहा– ''आज कुछ अपनी मेहनत से कमाकर लाओ नहीं तो शाम को खाना नहीं मिलेगा।''

लड़का बेहद आलसी और कामचोर था। वह अपनी माँ के पास गया और रोने लगा। उसका रोना देख ***'माँ'*** व्याकुल हो गई। उसने अपना बटुआ खोला और उसमें से एक रुपया निकाल कर अपने बेटे को दे दिया।

रात को पिता ने बेटे से पूछा–

''दिन में क्या कमाया?''

लड़के ने जेब से रुपए का सिक्का निकालकर पिता को दे दिया। पिता ने कहा–

''जा इसे पड़ोस के कुएँ में फेंक आ।''

लड़के ने बड़ी फुर्ती से पिता की आज्ञा पूरी कर दी। पिता अनुभवी थे। वह सारा हाल जान गए। उन्होंने लड़के की माँ को उसके मायके भिजवा दिया। अगले दिन लड़के को फिर बुलाया और कहा–

''जाओ, आज कुछ कमा के लाओ, तभी शाम को खाना मिलेगा।''

लड़का अपनी ***बहन*** के पास जाकर रोने लगा। बहन को तरस आ गया। उसनके अपनी गुल्लक खोल कर रुपए का सिक्का भाई को दे दिया। रात को पिता द्वारा पूछे जाने पर कि दिन में क्या कमाया उसने जेब से रुपया निकालकर दिखा दिया। पिता ने कहा–

''इसे भी कुएँ में डाल आओ।''

लड़का पहले की तरह तेज़ी से गया और सिक्के को कुएँ में फेंक आया। अनुभवी पिता समझ गए। उन्होंने लड़के की बहन को भी उसके ससुराल भेज दिया और लड़के को मेहनत की कमाई लाने को कहा। लड़का परेशान रहा। उसकी परेशानी से उस दिन कोई पिघला नहीं। शाम के समय वह बाज़ार में मज़दूरी ढूंढने लगा। बहुत कोशिश करने पर

एक सेठ ने भारी बोझा उठाने के लिए कहा। बदले में उसे चार आने देने के लिए कहा। बोझ से लड़के की कमर लचक गई। पसीने से वह तर–ब–तर हो गया। दुकान पर पहुँच कर सेठ ने चवन्नी दे दी।

रात को पिता ने पूछा–

''आज दिन भर में तूने क्या कमाई की?''

लड़के ने जेब से चवन्नी निकालकर उसे दिखाई। पिता ने कहा–

''इसे भी कुएँ में फेंक दे।''

लड़के ने गुस्से में जवाब दिया–

''मेरी तो कमर लचक गई, आप कहते हैं–
इस चवन्नी को कुएँ में फेंक दे।''

अनुभवी पिता ने पुत्र की पीठ थप–थपाई और उसे छाती से लगा लिया उन्होंने अपनी दुकान का कारोबार भी उसे ही सौंप दिया।

संपादक के विचार

शुद्ध बुद्धि से शुद्ध/शुभ कर्म होते हैं और अशुद्ध बुद्धि से पापयुक्त कर्म होते हैं। इसी कारण गायत्री मन्त्र की महानता है। ***ऋग्वेद*** में कहा–

बुद्धि ज्ञानेन शुद्धयति

अर्थात् बुद्धि ज्ञान से शुद्ध होती है। ज्ञान का स्रोत वेद तथा वेदों के ज्ञाता, ऋषि–मुनि हैं जिनकी बुद्धि जन्म–जन्मांतरों की तपस्या के पश्चात् शुद्ध रहती है। ***यजुर्वेद मन्त्र 4/11*** में भी कहा कि वह प्रज्ञा एक तीर्थ स्थल है जहाँ जाकर मनुष्य अपनी बुद्धि शुद्ध कर लेता है और उस बुद्धि से केवल शुभ कर्म करता है। याद रखो उत्तम, शुद्ध बुद्धि द्वारा ही तीर्थ रूप वेदाध्ययन, धर्माचरण आदि शुभ कर्मों का अनुष्ठान किया जाता है। विद्या का प्रकाश (वैदिक ज्ञान) भी इसी प्रज्ञा से धारण किया जाता।

अत: चारों वेदों में उपदेश है कि जन्म लेने के पश्चात् पाँच अथवा छ: वर्ष की आयु से ही मनुष्य ***ज्ञान–काण्ड, कर्म काण्ड*** एवं ***उपासना काण्ड (त्र्यम् ब्रह्म सनातनम्)*** इन तीनों सनातन विद्याओं को किसी ऋषि–मुनि, जो चारों वेदों का ज्ञाता समाधिस्थ पुरुष है, उसकी शरण में जाकर प्राप्त करना प्रारम्भ कर दें। कर्म करने में जिस–जिस अंग एवं साधन की आवश्यकता है, उस–उसका यजुर्वेद में ज्ञान दिया गया है। अत: आचार्य से यजुर्वेद

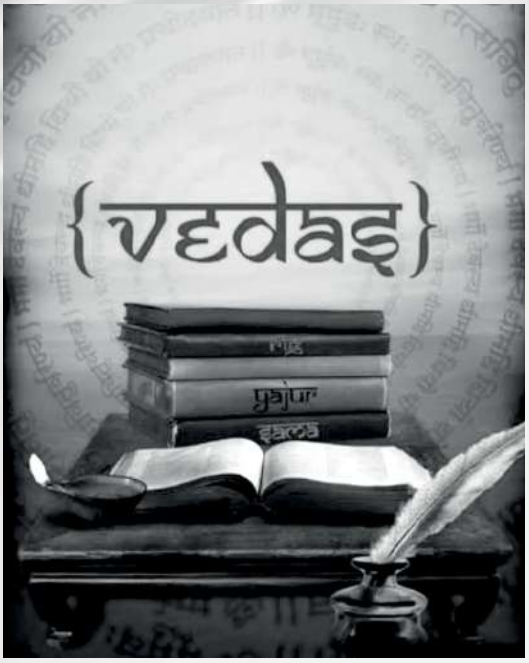

भी सुनते रहना चाहिए।

ध्यान रखो जब तक विद्या आचरण में नहीं होगी, क्रियात्मक ज्ञान नहीं होता, तब तक उत्तम सुख भी नहीं मिलता। इसलिए स्वयं शुद्ध बुद्धि प्राप्त करके यज्ञ रूप शुभ कर्म करना आवश्यक है। अतः सुख/मोक्ष प्राप्ति के लिए विज्ञान–विशेष ज्ञान (वेदों में वर्णित आध्यात्मिक एवं भौतिक, दोनों ज्ञान), यह क्रिया का निमित्त है। अर्थात् सचमुच में विद्या का अध्ययन, योगाभ्यास आदि आचार्य से प्राप्त करने का निमित्त है, प्रकाश कारक और अविद्या को नष्ट करने वाला हैं तथा धर्म में अग्रसर करके धर्म और पुरुषार्थ में लगाने वाला है।

इस प्रकार जो–जो कर्म विज्ञान युक्त होते हैं, केवल वह–वह कर्म ही सुख को उत्पन्न करने वाले होते हैं। इसलिए मनुष्यों को विज्ञानपूर्वक ही कर्मों का अनुष्ठान करना चाहिए। याद रखो जीव चेतन होने के कारण क्षण मात्र के लिए भी कर्म किए बिना नहीं रह सकता और किया हुआ कर्म कभी मिथ्या नहीं होता। जिस कारण मनुष्यों को ईश्वर तथा धार्मिक विद्वानों की पूजा करनी चाहिए, वैदिक शुभ कर्म, विद्वानों से विद्या आदि शुभ गुणों की प्राप्ति, विद्वानों को उत्तम दान तथा उन पर द्रव्य (अन्न, धन), तन, मन, प्राणादि व्यय करने चाहिए। ये शुभ कर्म कभी मिथ्या नहीं जाएँगे और वेद विरुद्ध कर्म भी मिथ्या नहीं जाएँगे, वे सदा दुःख देते रहेंगे, भिन्न–भिन्न योनियों में भटकाएँगे। सावधान रहो, शरीर की आयु थोड़ी है, विघ्न अधिक हैं और हमने आँख बन्द करने से पहले देवयान मार्ग स्वयं को भी, परिवार को भी और अन्य को भी प्राप्त कराना है।

ऋग्वेद मन्त्र 1/5/3 का भाव है–

''ईश्वरः पुरुषार्थिनो मनुष्यस्य सहायकारी भवति''

अर्थात् ईश्वर पुरुषार्थी मनुष्य का ही सहायकारी होता है, आलसी का नहीं।

यजुर्वेद मन्त्र 40/2 में भी महान् ज्ञान है कि पुरुषार्थ द्वारा किए वैदिक शुभ कर्म ही मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

VIV

श्रीमद्भगवद्गीता

(एक वैदिक रहस्य)

गतांग से आगे....

स्वामी रामस्वरूप 'योगाचार्य'

अत: महाभारत युद्ध एक ही परिवार की लड़ाई थी। भीष्म पर्व में जब धृतराष्ट्र व्याकुल होकर संजय से पूछ रहे हैं कि मूर्ख दुर्योधन के अज्ञान द्वारा युद्ध में अन्याय और न्याय की जो—जो बातें घटी और मेरी अक्षौहिणी सेना को व्यूहाकार में खड़ी देख युधिष्ठिर ने अपनी थोड़ी सी सेना द्वारा किस प्रकार व्यूह रचना की? संजय बोले कि भीष्म द्वारा व्यूह रचना देखकर युधिष्ठिर की कान्ति जब फीकी पड़ गई तब अर्जुन ने कहा, '' यतो धर्म: ततो जय:''

अर्थात् जहाँ धर्म है वहीं विजय है, और अर्जुन ने वहाँ एक दुर्जय वज्रव्यूह रचना प्रस्तुत की। इसी संदर्भ में गीता का अगला श्लोक है:—

संजय उवाच—

'दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं व्यूढं दुर्योधनस्तदा।
आचार्यमुपसंगम्य राजा वचनमब्रवीत्।।' (गीता 1/2)

(तदा) तब (दुर्योधन:) राजा दुर्योधन ने (व्यूढम्) व्यूह रचना युक्त (पाण्डवानीकम्) पाण्डवों की सेना को (दृष्ट्वा) देखकर (तु) नि:संदेह (आचार्यम्) आचार्य के (उपसंगम्य) निकट जाकर (वचनम्) वचन (अब्रवीत्) कहे।

अर्थ: तब राजा दुर्योधन ने पाण्डवों द्वारा व्यूह रचना में खड़ी सेना को देखकर आचार्य द्रोण के निकट जाकर यह वचन कहे—

'पश्यैतां पाण्डुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूम्।
व्यूढां द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीमता।।' (गीता 1/3)

(आचार्य) हे आचार्य (तव) तेरे (धीमता) बुद्धिमान् (शिष्येण) शिष्य (द्रुपदपुत्रेण) द्रुपद के पुत्र द्वारा (व्यूढाम्) व्यूह रचना युक्त (पाण्डुपुत्राणाम्) पाण्डुपुत्रों की (एताम्) इस (महतीम्) बड़ी (चमूम्) सेना को (पश्य) देखिए।

अर्थ– हे आचार्य, द्रोण! आपके बुद्धिमान् शिष्य द्रुपदपुत्र धृष्टद्युम्न द्वारा व्यूह रचना युक्त पाण्डु पुत्र की इस बड़ी सेना को देखिए।

भावार्थ– महाभारत युद्ध पारिवारिक लड़ाई है। दोनों तरफ के राजा एक दूसरे की सेना को देखकर घबरा रहे हैं। पुत्र मोहवश, छल द्वारा धृतराष्ट्र ने राजगद्दी को हड़प लिया था। वेद वाक्य है कि ऐसे राज्य का परिणाम नारी–अपमान, वैदिक धर्म की हानि, भ्रष्टाचार इत्यादि ही होता है और यही सब कुछ उस राज्य में बढ़ गया था। तब धर्म की पुनः स्थापना के लिए यह युद्ध लड़ा गया। जिसका कुप्रभाव आज तक इस पृथिवी पर राजनीति और धर्म की आड़ में पाप वृत्तियों का प्रभाव के रूप में हम भोग रहे हैं। अतः धन, पुत्र अथवा कुर्सी का मोह वर्तमान के नेताओं में भी है, तो वोटों की राजनीति, भ्रष्टाचार, नारी–दुर्दशा, भाई–भतीजावाद, उग्रवाद, पर्यावरण से छेड़छाड़ अन्याय इत्यादि कुरीतियों सहित थोथे कर्मकाण्ड एवं अंधविश्वासों पर टिका अप्रमाणिक धर्म भविष्य में निश्चित ही अत्याधिक अथवा पूर्ण रूप से जनता के लिए घातक सिद्ध होगा, इसमें संदेह नहीं।

द्रोणाचार्य के शिष्य धृष्टद्युम्न ने पाँच पाण्डवों सहित अस्त्र–शस्त्र विद्या द्रोणाचार्य से ही सीखी और व्यूह रचना करके अपने ही आचार्य द्रोण से युद्ध करने आमने–सामने आ गए। इससे गीता में यह स्पष्ट हो जाता है कि इन सबने अपने आचार्य के विरुद्ध युधिष्ठिर का साथ देना धर्म समझा और दुर्योधन का पक्ष इन्होंने अधर्म–युक्त करार दिया। अतः गीता यहाँ संकेत करती है कि ऐसे गुरु जो वेदों में कहे धर्म पर नहीं चलते, मिथ्यावादी, मन में कुछ और वाणी से कुछ बोलने वाले, धर्म–आचरण से रहित हैं उन्हें त्याग दिया जाए अन्यथा उनके मिथ्यावादी उपदेशों से तथा झूठे बहकावों से जीवन दुःखमय होता चला जाएगा। राजा दुर्योधन आचार्य द्रोण से बोले–

'अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि।
युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथः।।' (गीता 1/4)

(अत्र) यहाँ (युधि) युद्ध में (महेष्वासाः) बड़े–बड़े धनुषधारी (भीमार्जुन) भीम और अर्जुन के (समाः) समान (युयुधानः) सात्यकि (च) और (विराटः) विराट (च) तथा (महारथः) महारथी (द्रुपदः) द्रुपद (शूराः) शूरवीर (सन्ति) हैं।

अर्थ: युद्ध में यहाँ भीम और अर्जुन के समान बल वाले शूरवीर युयुधान, विराट और महारथी द्रुपद दिखाई दे रहे हैं। (राजा द्रुपद की पुत्री ''द्रौपदी'' और पुत्र 'धृष्टद्युम्न' था।)

'धृष्टकेतुश्चेकितानः काशिराजश्च वीर्यवान्।
पुरुजित्कुन्तिभोजश्च शैब्यश्च नरपुङ्गवः।।' (गीता 1/5)

(च) और (धृष्टकेतु:) धृष्टकेतु राजा (चेकितान:) योद्धा चेकितान (च) और (वीर्यवान्) शक्तिशाली (काशिराज:) काशी का राजा (पुरुजित्) पुरुजित् (कुन्तिभोज:) राजा कुन्तिभोज (च) और (नरपुङ्गव:) मनुष्यों में श्रेष्ठ (शैब्य:) राजा शैब्य हैं।

अर्थ– और धृष्टकेतु, चेकितान तथा शक्तिशाली काशी के राजा पुरुजित्, राजा कुन्तिभोज तथा नर श्रेष्ठ राजा शैब्य हैं।

'युधामन्युश्चविक्रान्त उत्तमौजाश्च वीर्यवान्।
सौभद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः।।' (गीता 1/6)

(च) और (विक्रान्त:) पराक्रमी (युधामन्यु:) युधामन्यु (च) और (वीर्यवान्) बलशाली (उत्तमौजा:) उत्तमौजा (सौभद्र:) सुभद्रा पुत्र अभिमन्यु (च) और (द्रौपदेया:) द्रौपदी के पाँचों पुत्र (सर्वे एव महारथा:) ये सब के सब ही महारथी हैं। (दस हज़ार धनुर्धारी योद्धाओं के साथ अकेले युद्ध करने वाला उस समय महारथी कहलाता था। अथवा जिसके पास एक बड़ा रथ हो वह महारथी हुआ।)

अर्थ– और पराक्रमी युधामन्यु, बलशाली उत्तमौजा, सुभद्रा पुत्र अभिमन्यु तथा द्रौपदी के पाँचों पुत्र ये सब के सब ही महारथी हैं।

भावार्थ– श्लोक *4* से *6* तक राजा दुर्योधन ने आचार्य द्रोण को पाण्डुपुत्रों की सेना के प्रधान सेनापति एवं सेना के मुख्य रक्षक योद्धाओं का परिचय दिया है। राजा दुर्योधन पाण्डु पुत्रों के प्रधान महारथियों का परिचय देकर उसके पश्चात् अपनी इस सेना के सामर्थ्य का परिचय आचार्य द्रोण को दे रहे हैं।

'अस्माकं तु विशिष्टा ये तान्निबोध द्विजोत्तम।
नायका मम सैन्यस्य संज्ञार्थं तान्ब्रवीमि ते।।' (गीता 1/7)

(द्विजोत्तम) हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ (अस्माकम्) हमारे (तु) तो (ये) जो (विशिष्टा:) प्रधान हैं (तान्) उनको (निबोध) जानिए। (नायका:) नायक हैं (मम) मेरी (सैन्यस्य) सेना के (ते) आपकी (संज्ञार्थम्) जानकारी के लिए {(संज्ञा)–उनके नाम} (तान्) उनको (ब्रवीमि) कहता हूँ।

अर्थ– राजा दुर्योधन ने कहा– हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ आचार्य द्रोण अब हमारी सेना के जो मुख्य नायक (सेनापति) हैं, उनको भी आप जानिए। आपकी जानकारी के लिए मैं उनके नाम कहता हूँ।

भावार्थ– भगवद्गीता ग्रन्थ व्यास मुनि जी, जो वेदों के महाविद्वान् हैं, उनकी कृति है। क्योंकि गीता काल तक किसी भी मज़हब, सम्प्रदाय अथवा किसी एक भी वर्तमान की धार्मिक पुस्तकों की रचना नहीं हुई थी। अत: गीता में वर्णित सब विशिष्ट शब्द वेदों से ही लिए गए हैं। अत: ऊपर कहा द्विजोत्तम (द्विज+उत्तम) शब्द भी वैदिक है और गूढ़ मार्मिक अर्थ लिए हुआ है। जिसे आज प्राय: भुला दिया गया है। 'द्वि' का अर्थ है दूसरा, 'ज' अक्षर जब समास के अन्त में आता है तब इसका अर्थ होता है ***''इससे जन्म लिया''।*** अष्टाध्यायी सूत्र ***'संख्यापूर्वो द्विगु:' 2/1/51*** के अनुसार द्विज शब्द द्विगु समास है। ***मनुस्मृति अध्याय–2 श्लोक 147*** में कहा है कि वेद की आज्ञा अनुसार मनुष्य का जन्म प्रथम माता–पिता द्वारा और दूसरा जन्म तब समझो जब वह वेदज्ञ विद्वान् से दीक्षा लेता है। ***अथर्ववेद मंत्र 11/7/8*** में 'छन्दसा सह दीक्षा' वेद ज्ञान के साथ दीक्षा लेना कहा है। ***यजुर्वेद मन्त्र 19/30*** में कहा है कि जब–जब मनुष्य धर्म की जिज्ञासा हेतु सत्य भाषण एवं ब्रह्मचर्य आदि नियम धारण करता है तब 'दीक्षाम् आप्नोति' वह वेदों के साथ यज्ञ की दीक्षा प्राप्त करता है। दीक्षा से (दक्षिणा) धन वा प्रतिष्ठा और दक्षिणा से (श्रद्धाम्) सत्य को धारण करने की इच्छा एवं श्रद्धा से ईश्वर को प्राप्त करता है। यह सब वर्तमान के नहीं अपितु वैदिक अर्थ हैं। इन्हीं सब गुणों को धारण करने वाले वेद ज्ञान के ज्ञाता महापुरुष द्रोण को यहाँ द्विज+उत्तम, द्विजों में उत्तम, कहा है। वेद सब विद्याओं का भण्डार है, अत: द्रोणाचार्य जी ने भी शस्त्र–विद्या का ज्ञान अपने आचार्य द्वारा दीक्षित होकर वेदों में से ही लिया था। अत: द्विज कहलाए थे। आज हमें इस मार्मिक शब्द द्विज को समझने की आवश्यकता है। द्रोणाचार्य तो शस्त्र विद्या के महारथी थे परन्तु अन्य ऋषि याज्ञवल्क्य, श्रीराम के आचार्य वसिष्ठ मुनि, श्री कृष्ण के आचार्य सन्दीपन और ऐसे ही व्यास मुनि इत्यादि पूर्व के सब महापुरुष द्विज थे। आज के गुरुओं को भी यह भगवद्–गीता का श्लोक वैदिक दीक्षा के लिए आमंत्रित कर रहा है। अन्यथा वेद मन्त्र दृष्टा श्री कृष्ण एवं मुनि व्यास द्वारा कही गीता को, वेदों से न जानने वाले स्वयं भी न समझ पाएँगे फिर तो वह निश्चित ही ***सांख्य शास्त्र के सूत्र 3/81*** के अनुसार अन्धपरम्परा को ही बढ़ावा देंगे।

सृष्टि रचयिता ईश्वर की तरह ज्ञान भी निराकार है। ***यजुर्वेद मंत्र 31/11, सामवेद मंत्र 844 और ऋग्वेद मंत्र 1/164/46*** में कहा कि मंत्र दृष्टा ऋषियों के मुख द्वारा ज्ञान निकलता है। ईश्वर की तरह ज्ञान भी दिव्य है, इस लोक का नहीं, अपितु यह स्वंय सृष्टि रचयिता ईश्वर से ही झरता है। जैसा कि ***यजुर्वेद मंत्र 31/7*** से स्पष्ट है। यह मंत्र, चारों वेदों के ज्ञान को ईश्वर से उत्पन्न सिद्ध करता है। अत: मानव धर्म ईश्वर का बनाया है इसे स्वयं मानव नहीं बना

सकता। गीता अध्याय *13* श्लोक *4* में स्वयं भगवान् कृष्ण कहते हैं कि हे अर्जुन! ऋषियों ने बहुत प्रकार से इसे गाया है तथा ऋग्, यजु, साम तथा अथर्ववेद में 'क्षेत्र' जो शरीर है एवं क्षेत्रज्ञ जो जीव है तथा परमात्मा है, के इस ज्ञान को पृथक्–पृथक् कहा गया है। उसी परमात्मा से उत्पन्न वेदों में वर्णित एवं पुनः ऋषियों द्वारा उच्चारित ज्ञान इस पवित्र गीता ग्रन्थ में है। अतः श्री कृष्ण जी के अनुसार भी भगवद्गीता को वेदों से पृथक् नहीं किया जा सकता। दुर्योधन द्विजों में श्रेष्ठ आचार्य द्रोण से कह रहे हैं:–

'भवान्भीष्मश्च कर्णश्च कृपश्च समितिंजयः।
अश्वत्थामा विकर्णश्च सौमदत्तिस्तथैव च।।' (गीता 1/8)

(भवान्) आप (च) और (भीष्मः च कर्णः) भीष्म और कर्ण (च) तथा (समितिंजयः) युद्ध में जीतने वाले (कृपः) कृपाचार्य (च) और (तथा एव) वैसे ही (अश्वत्थामा) अश्वत्थामा (विकर्णः) विकर्ण (च) और (सोमदत्तिः) वाहिकों के राजा सोमदत्त का पुत्र भूरिश्रवा हैं।

अर्थ– आप (द्रोणाचार्य), भीष्म, कर्ण, युद्ध में जीतने वाले कृपाचार्य और वैसे ही अश्वत्थामा, विकर्ण तथा वाहिकों के राजा सोमदत्त का पुत्र भूरिश्रवा हैं।

'अन्ये च बहवः शूरा मदर्थे त्यक्तजीविताः।
नानाशस्त्रप्रहरणाः सर्वे युद्धविशारदाः।।' (गीता 1/9)

(मदर्थे) मेरे लिए (नानाशस्त्रप्रहरणाः) प्राण हरण करने वाले भिन्न–भिन्न प्रकार के शस्त्रों सहित (अन्ये) अन्य (च) और (बहवः) अनेक (शूराः) शूरवीर (त्यक्तजीविताः) जीवन त्यागने वाले (सर्वे) सब (युद्धचिशारदाः) युद्ध करने में प्रवीण हैं।

अर्थः इसके अतिरिक्त मेरे लिए जीवन त्यागने वाले अन्य भी अनेक शूरवीर युद्ध में लड़ने वाले हैं जो सबके सब युद्ध करने में प्रवीण एवं भिन्न–भिन्न शस्त्र चलाने में निपुण हैं।

'अपर्याप्तं तदस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितम्।
पर्याप्तं त्विदमेतेषां बलं भीमाभिरक्षितम्।।' (गीता 1/10)

(भीष्माभिरक्षितम्) भीष्म द्वारा रक्षित (तत्) वह (अस्माकम्) हमारी (बलम्) सेना (अपर्याप्तम्) सक्षम नहीं है, (इदम्) यह (तु) तो (भीमाभिरक्षितम्) भीम द्वारा रक्षित (बलम्) सेना (एतेषाम्) इनकी (पर्याप्तम्) सक्षम/काफी है।

अर्थ– सेनापति भीष्म द्वारा रक्षित वह हमारी सेना का बल पर्याप्त नहीं है। और पाण्डु पुत्रों की सेना का बल पर्याप्त है, उनका सेनापति महाबली भीम है।

भावार्थ– इस श्लोक में दो शब्द, पहला अपर्याप्त दूसरा पर्याप्त के कई जगह अर्थ क्रमशः

अपरिमित/नाकाफी एवं परिमित/काफी किया है।

कौरवों ने पाण्डवों को मारने के लिए लाख का घर बनाया जो बुज़दिली का प्रतीक था। महाभारत के सभा पर्व का वर्णन है कि एक बार जब धृतराष्ट्र ने पाण्डुपुत्रों को वन में भेज दिया था तब शोकग्रस्त धृतराष्ट्र को संजय ने कहा कि अब आप शोकाकुल क्यों है? उत्तर में धृतराष्ट्र ने कहा कि हे संजय! जिसका वैर महारथी बलवान् पाण्डवों से हो जाए, वह शोक मग्न हुए बिना कैसे रह सकते हैं?अत: यहाँ अपर्याप्त का अर्थ असक्षम अथवा नाकाफी और पर्याप्त का अर्थ सक्षम अथवा काफी है। भाव यह है कि धृतराष्ट्र की तरह धृतराष्ट्र पुत्र दुर्योधन भी पाण्डुपुत्रों के बल को परिमित तथा अपने से अत्याधिक मानता था। अन्यथा लाख का घर, जुए में जीतकर वन भेजने, भीष्म इत्यादि की सहायता लेने के बजाय वह पाण्डवों से सीधा युद्ध कर सकता था जिसकी उसमें हिम्मत नहीं थी। जब छद्म युद्ध इत्यादि कोई भी युक्ति सफल न हो पाई तब उसने भीष्म, द्रोण, कर्ण एवं कृपाचार्य इत्यादि अनेक महारथियों के बल के भरोसे युद्ध घोषित कर दिया। वस्तुत: वर्तमान में भी ऐसे अनेक दुर्योधन पैदा हैं जो स्वयं को भूमिगत करके अपराध जगत् में सिरमौर हैं। ऐसे अपराधी देश और विदेश दोनों जगह हैं। ***अथर्ववेद मंत्र 3/1/2*** में कहा है कि राजा की सेना यदि थोड़ी भी हो और शत्रु का भयंकर संकट उपस्थित हो तब भी रणनीति द्वारा सेना शत्रुओं को मसल डाले। वैदिक परम्परा की 'यतो धर्म: ततो जय:' युक्ति भी सत्य है। इन सब बातों को दुर्योधन भली भांति जानता था। अत: वह जानता था कि इस युद्ध में जहाँ पाण्डुपुत्र एकमत होकर पूर्ण शक्ति से युद्ध करेंगे वहाँ धर्मात्मा भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य जैसे अनेक महारथी ह्रदय से पाण्डवों के साथ और शरीर से दुर्योधन साथ थे। अत: दुर्योधन डरा हुआ सा है। तभी पाण्डुपुत्रों से कई गुणा अधिक सेना एवं उनसे कई गुणा अधिक बलशाली भीष्म जैसे योद्धाओं का साथ होने पर भी अपनी सेना को अपर्याप्त एवं शत्रुपक्ष पाण्डुपुत्रों की सेना को पर्याप्त कह रहा है। संस्कृत भाषा में पर्याप्त का अर्थ सक्षम/यथेष्ट/काफी है तथा अपर्याप्त का अर्थ असक्षम/जो काफी नहीं है, दिए गए हैं, यही उचित है। दुर्योधन बोले–

'अयनेषु च सर्वेषु यथाभागमवस्थिता:।
भीष्ममेवाभिरक्षन्तु भवन्त: सर्व एव हि।।' (गीता 1/11)

(च) और (भवन्त:) आप (सर्वेषु) सब (अयनेषु) मोर्चों पर (यथाभागम्) अपने–अपने भाग के अनुसार (अवस्थिता:) स्थित रहते हुए (सर्वे) सब (एव) ही (हि) नि:सन्देह (भीष्मम्) भीष्म की (एव) ही (अभिरक्षन्तु) सब तरफ से रक्षा करें।

अर्थ– और आप सब मोर्चों पर अपने–अपने भाग के अनुसार स्थित रहते हुए सब ही नि:सन्देह भीष्म की ही सब तरफ से रक्षा करें।

भावार्थ– भीष्म पर्व में ही भगवद्गीता ग्रन्थ के श्लोक आरम्भ होने से पूर्व का वर्णन है कि जब दोनों सेनाएं अपने–अपने स्थान पर युद्ध के लिए तैयार हो गईं तब दुर्योधन ने कहा–''हे

दु:शासन! आप भीष्म की रक्षा के लिए रथों को शीघ्र तैयार कराओ। सम्पूर्ण सेनाओं को भीष्म की रक्षा करने की आज्ञा दो। मैं भीष्म की रक्षा से बढ़कर और कोई कार्य आवश्यक नहीं समझता, क्योंकि भीष्म के सुरक्षित रहने पर ही हम कुन्ती पुत्रों सहित सबको मार सकते हैं।'' दुर्योधन आगे बोले कि ''विशुद्ध हृदय भीष्म मुझे कह चुके है कि मैं शिखण्डी को युद्ध में नहीं मारूँगा, क्योंकि सुनते हैं कि वह पहले स्त्री था, अत: रणभूमि में मेरे लिए वह सर्वथा त्यागने योग्यहै, अत: मेरे सारे सैनिक मिलकर प्रथम शिखण्डी को ही मारने का प्रयत्न करें।'' दुर्योधन के शिखण्डी के प्रति कहे ये वाक्य वेद–विरुद्ध एवं भीष्म पितामह के विरुद्ध हैं, अत: अधर्मयुक्त हैं। जहाँ वेद एवं वैदिक धर्म निभाने वाले भीष्म पितामह नारी और निहत्थे पर शस्त्र प्रहार नहीं करते थे दुर्योधन ने इसके विपरीत ही आचरण किया था। महाभारत का युद्ध ऐसे कई प्रकार के वेद–विरुद्ध अधर्मयुक्त कर्मों को नाश करके धर्म स्थापना के लिए ही लड़ा गया था।

महाभारत के भीष्म पर्व में युद्ध की पहली आज्ञा दुर्योधन ने भीष्म पितामह की रक्षा के प्रति कही है, क्योंकि उन्हें डर है कि पाण्डुपुत्रों द्वारा शिखण्डी को यदि युद्ध के लिए पितामह के सम्मुख खड़ा किया तो भीष्म शस्त्र त्याग देंगे। और भीष्म पितामह इस प्रकार युद्ध में मारे जा सकते हैं। दुर्योधन स्पष्ट कह रहा है कि यदि भीष्म जीवित हैं तभी पाण्डुपुत्र सहित सब मारे जाएँगे। दुर्योधन को अपने बल की अपेक्षा भीष्म के ही बाहुबल पर पूरा विश्वास था, जिस कारण दुर्योधन ने युद्ध लड़ा था। दूसरा दुर्योधन ने भीष्म को यहाँ ''विशुद्ध हृदय'' वाला कहा है, जो छल कपट नहीं करता। तीसरा भीष्म नारी पर हाथ नहीं उठाते हैं। आज वैदिक शिक्षा की कमी से सैनिकों में ऐसे धर्म का पालन अत्यन्त कठिन सा दीख पड़ता है। सेना के बम अथवा उग्रवादियों की गोलियाँ तो बच्चे, बूढ़े, निहत्थे तथा बेबस नारी किसी को भी नहीं छोड़ती। अत: भगवद्गीता ग्रंथ एक धार्मिक ग्रंथ भी है जो हमारे पूर्वजों की जीवनी में उतारी वैदिक शिक्षा को अपनाकर वर्तमान में भी पृथिवी पर धर्म स्थापना की प्रेरणा दे रहा है। और महाभारत का युद्ध भी इस प्रकार धर्म स्थापित करने के लिए लड़ा गया धर्म–युद्ध है। धर्म का पक्ष युद्ध में पाण्डुपुत्रों सहित श्री कृष्ण का तथा अधर्म का पक्ष धृतराष्ट्र एवं दुर्योधन, शकुनि इत्यादि का है।

'तस्य संजनयन्हर्षं कुरुवृद्धः पितामहः।
सिंहनादं विनद्योच्चैः शङ्खम् दध्मौ प्रतापवान्।' (गीता 1/12)

(कुरुवृद्ध:) कौरवों में वृद्ध (प्रतापवान्) पराक्रमी (पितामह:) पितामह भीष्म ने (तस्य) उसके अर्थात् दुर्योधन के हृदय में (हर्षम्) हर्ष को (संजनयन्) उत्पन्न करते हुए (उच्चै:) उच्च स्वर द्वारा (सिंहनाद) सिंह नाद जैसा (विनद्य) गर्जकर (शंखम्) शंख (दध्मौ) बजाने लगे।

अर्थ– तब राजा दुर्योधन के हृदय में हर्ष उत्पन्न करते हुए कौरवों में वृद्ध एवं पराक्रमी पितामह

भीष्म उच्च स्वर से गर्जकर सिंह की तरह गर्जना करके शंख को बजाने लगे।

'ततः शंखाश्च भेर्यश्च पणवानकगोमुखाः।
सहसैवाभ्यहन्यन्त स शब्दस्तुमुलोऽभवत्।।' (गीता 1/13)

(ततः) उसके बाद (शंखाः) शंख (च) और (भेर्यः) नगारे (च) और (पणवः) ढोल मृदङ्ग (आनकः) नृसिंहादि (गोमुखः) गोमुख आदि वाद्य (सहसा) एक साथ (एव) ही (अभ्यहन्यन्त) बजाए गए (सः) वह (शब्दः) शब्द (तुमुलः) बड़ा भयानक (अभवत्) हुआ।

अर्थ– उसके बाद शंख, भेरी, पणव, आनक और गोमुखादि (ढोल—नगारे आदि) वाद्य एक साथ ही बजाए गए, वह शब्द बड़ा भयानक हुआ।

'ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते महति स्यन्दने स्थितौ।
माधवः पाण्डवश्चैव दिव्यौ शंखौ प्रदध्मतुः।।' (गीता 1/14)

(ततः) तब (श्वेतैः) सफेद (हयैः) घोड़ों से (युक्ते) जुड़े हुए (महति) विशाल (स्यन्दने) रथ में (स्थितौ) बैठे (माधवः) श्री कृष्ण (च) और (पाण्डवः) पाण्डुपुत्र अर्जुन ने (एव) भी (दिव्यौ) दिव्यगुण युक्त (शंखौ) शंख (प्रदध्मतुः) बजाए।

अर्थ– तब सफेद घोड़ों से जुड़े हुए विशाल रथ में बैठे श्रीकृष्ण और पाण्डु—पुत्र अर्जुन ने भी दिव्यगुण युक्त शंख बजाए।

'पाञ्चजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनंजयः।
पौण्ड्रं दध्मौ महाशंख भीमकर्मा वृकोदरः।।' (गीता 1/15)

(हृषीकेशः) श्रीकृष्ण महाराज ने (पाञ्चजन्यम्) पाञ्चजन्य नामक शंख (धनंजयः) अर्जुन ने (देवदत्तम्) देवदत्त नामक शंख (भीमकर्मा) भयानक कर्म वाले (वृकोदरः) भीमसेन ने (पौण्ड्रम्) पौण्ड्र नामक (महाशंखम्) महाशंख (दध्मौ) बजाया।

अर्थ– श्री कृष्ण महाराज ने पाञ्चजन्य नामक शंख, अर्जुन ने देवदत्त नामक शंख, भयानक कर्म वाले भीमसेन ने पौण्ड्र नामक महाशंख बजाया।

'अनन्तविजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः।
नकुलः सहदेवश्च सुघोषमणिपुष्पकौ।।'' (गीता 1/16)

(कुन्तीपुत्रः) कुन्तीपुत्र (राजा) राजा (युधिष्ठिरः) युधिष्ठिर ने (अनन्तविजयम्) अनन्तविजय नामक शंख और (नकुलः) नकुल (च) तथा (सहदेवः) सहदेव ने (सुघोषमणिपुष्पकौ) सुघोष और मणिपुष्पक नाम वाले शंख बजाए।

अर्थ– कुन्तीपुत्र राजा युधिष्ठिर ने अनन्तविजय नामक शंख और नकुल तथा सहदेव ने सुघोष और मणिपुष्पक नाम वाले शंख बजाए। ***(क्रमशः)***

Seema Sharma

RESPECT

"If you want to be respected by others, the great thing is to respect yourself. Only by that self-respect you will compel others to respect you."

Respect means that you accept somebody for who they are, even when they're different from you or you don't agree with them. Respect in your relationships builds feelings of trust, safety, and wellbeing. Respect doesn't have to come naturally – it is something you learn.

Going back in history ***Shri Chaitanya Mahāprabhu*** had said: ***"Consider yourself as less important than a blade of grass. Be more forbearing than a tree. Do not crave for respect, but respect others. Always sing the praise of Hari's name".*** In Hinduism, humility and being respectful are considered as marks of being an educated and a cultured person. Hindus greet each other by placing palms together in front of them, also known as ***'Namaskar'*** while they bow their heads. This shows respect to the belief that God exists in everyone. Children, in more traditional families, greet their parents by touching their feet (which is diminishing with time).

The ways to show respect to those around you, one should practice active listening not always crave to be listened by others. Seek to understand others feelings, views points. Must show empathy for basic differences & despite having differences, humility should be more. Politely accept the mistakes and apologize when you're not right. It's okay to disagree with the thoughts or opinions expressed by other people. That doesn't give you the right to deny any sense they might make.

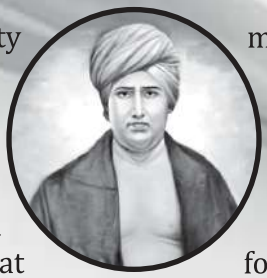

If someone has dignity and humility, it means they are worthy of respect. Dignity is a person's quality of being worthy of honour & respect. It means being valued and respected for what you are, what you believe in, and how you live your live. ***Treating other people with respect & dignity means treating them the way we'd like to be treated ourselves.*** Showing respect is a moral value, a two-way process that means a person can get respect when he respects others.

Every human has the right to lead a respectful dignified life.

As ***Swami Dayānand Saraswati*** acknowledged once the respect of a poor man. In a town of Anupshahar in Uttar Pradesh, a humble barber admired Swami Dayānand Sarasvati too much. One day, he served a few rotis to Swami Ji with great fear that everyone considered him a low born. He humbly apologized for offering rotis, as he was a person from lower caste in society. There were about 20 Brahmins sitting in the vicinity and they too criticised to accept rotis given by an unclean and lowly barber.

Swami Ji replied that there was nothing unclean about roti, as it was made of wheat, just as a roti from any other person. Only that food is unclean which is purchased with ill-gotten money or which has contaminating stuff in it. Swami Ji ate the rotis. This story shows how much respect and affection Swami Dayānand had in his heart for everyone, even for people who were regarded as lowly by the rest of the society.

In today's modern families how often we observe respect & love for elders or other family members? People are becoming just self-centred and want to love themselves only with motto of life 'I' 'me' and 'myself'. If a person is not respectful to others feelings or values he is one step away from cruelty no matter how highly educated that person is. ***Knowledge will give you power but respect will give you a character to identify with.***

We should not show pride, conceit or arrogance towards anyone as this will lead you to a ruthless life. Instead, we should treat everyone with respect, when you are content to be simply be yourself and don't compare or compete with others, respect and love people around you, similarly everybody will respect you.

As it is the fruit-laden tree whose branches bend. Similarly, it is a cultured person endowed with several qualities who bows out of humility & respect. Come what may fools and dried out trees may never bend, hence will never get respect.

VIV

गुरु-शिष्य संवाद

स्वामी रामस्वरूप 'योगाचार्य'

शीत ऋतु का आगमन है। इस ऋतु में सर्दी के कारण लोगों के शरीर रूखे–रूखे से हो जाते हैं। फिर भी ऋषि के आश्रम में रहने वाले ब्रह्मचारी विद्यार्थी सर्दी के प्रभाव से प्राय: मुक्त होते हैं। पृथिवी अन्न से हरी–भरी हो जाती है, पानी का स्पर्श किसी को अच्छा नहीं लगता। इस शीत ऋतु में सज्जन लोग नवसस्येष्टि यज्ञपूर्वक विद्वान्, माता–पिता तथा सम्बन्धियों का नव अन्न से सत्कार करके निष्पाप हो जाते हैं। इस शीत ऋतु में अन्य ऋतुओं की अपेक्षा दूध–दही भी अधिक होता है और पाचन शक्ति भी अच्छी हो जाती है। इस समय आश्रम के विद्यार्थी भी अपने कक्ष में एकत्रित होकर अपने आचार्य की प्रतीक्षा कर रहे हैं। ऐसे में आचार्य ने कक्ष में पदार्पण किया और सभी विद्यार्थियों ने उठकर उनका स्वागत किया–प्रणाम किया। आचार्य के स्थान ग्रहण करने के पश्चात् सभी विद्यार्थियों ने भी अपना–अपना स्थान ग्रहण किया।

आचार्य ने सभी विद्यार्थियों को आशीर्वाद देते हुए, पुन: सोमेन्द्र कौशिक को पूछा–

आचार्य– हे सोमेन्द्र! क्या आप वाल्मीकि रामायण से श्रीराम के कुछ गुणों का वर्णन कर सकते हो?

सोमेन्द्र:– हे आचार्य! वाल्मीकि रामायण के बालकाण्ड, प्रथम सर्ग में कहा है कि एक समय तप और स्वाध्याय में निरत, वक्ताओं में चतुर एवं मुनियों में श्रेष्ठ नारद जी से तपस्वी वाल्मीकि मुनि ने पूछा, ***''भगवन्! इस समय इस संसार में गुणवान्, शूरवीर, धर्मज्ञ, कृतज्ञ,***

सत्यवादी और दृढ़–प्रतिज्ञ कौन है और धैर्ययुक्त, काम–क्रोधादि शत्रुओं का विजेता, कान्तियुक्त, ईर्ष्या तथा निन्दा न करने वाला तथा युद्ध में क्रुद्ध होने पर देवताओं को भी भयभीत करने वाला कौन है?''

हे आचार्य! ऐसे कितने ही प्रश्न श्री राम के विषय में ऋषि वाल्मीकि जी ने भगवान् नारद जी से पूछे। वही मैं आपको यहाँ सुना रहा हूँ।

नारद जी ने उत्तर दिया– ''हे मुने! आपने जिन बहुत–से तथा दुर्लभ गुणों का वर्णन किया है, उनसे युक्त मनुष्य के सम्बन्ध में सुनिए–मैं सोच–विचार के पश्चात् कहता हूँ।'' (यहाँ नारद मुनि जी ने श्रीराम को मनुष्य कहा है।)

नारद जी ने कहा– ***''इक्ष्वाकु–वंश*** में उत्पन्न, राम नाम से लोगों में विख्यात, श्री राम चन्द्र नियत स्वभाव (मन को वश में रखने वाले), अति बलवान्, तेजस्वी, धैर्यवान् और जितेन्द्रिय हैं।

वे श्रीराम बुद्धिमान्, नीतिज्ञ, मधुर भाषी, श्रीमान्, शत्रुनाशक, विशाल कन्धों वाले, गोल तथा मोटी भुजाओं वाले, शंख के समान गर्दन वाले, बड़ी ठोड़ी वाले और बड़े भारी धनुष को धारण करने वाले हैं। उनकी गर्दन की हड्डियाँ माँस से छिपी हुईं हैं। वह शत्रु का दमन करने वाले हैं। उनकी भुजाएँ घुटनों तक लटकती हैं। उनका सिर सुन्दर एवं सुडोल है, माथा चौड़ा है। वह अच्छे विक्रमशाली हैं।

उनके अंगों का विन्यास सम है। वह ना बहुत छोटे हैं ना बहुत बड़े। उनके शरीर का रंग चिकना एवं सुन्दर है। वह बहुत प्रतापी हैं। उनकी छाती–उभरी हुई है और नेत्र विशाल हैं। उनके सब अङ्ग–प्रत्यङ्ग सुन्दर हैं और वह शुभ लक्षणों से सम्पन्न हैं। वह धर्मज्ञ, सत्यप्रतिज्ञ, परोपकारी, कीर्तियुक्त, ज्ञाननिष्ठ, पवित्र, जितेन्द्रिय और समाधि लगाने वाले हैं।

वह प्रजापति, ब्रह्म के समान प्रजा के रक्षक, अतिशोभावान् और सबके पोषक हैं। वह शत्रुओं का नाश करने वाले हैं। वह प्राणी मात्र के रक्षक और धर्म के प्रवर्तक हैं। वह अपने प्रजा–पालन रूप, धर्म के रक्षक, स्वजनों के पालक, वेद एवं वेदाङ्गों के मर्मज्ञ तथा धनुर्वेद में निष्णात हैं अर्थात् शास्त्र एवं शस्त्र, दोनों में प्रवीण हैं।

वह सब शास्त्रों के तत्त्वों को भली–भांति जानने वाले, उत्तम स्मरण–शक्ति से युक्त, सूझ–बूझ वाले,

सर्वप्रिय, सज्जन, कभी दीनता ना दिखाने वाले तथा लौकिक एवं अलौकिक क्रियाओं में कुशल हैं।

जिस प्रकार नदियाँ समुद्र में पहुँचती हैं उसी प्रकार उनके पास सदा सज्जनों का समागम रहता है। वे आर्य हैं, समदृष्टि हैं और सदा प्रिय दर्शन हैं।''

आचार्य– बहुत उत्तम, बेटा! श्री राम जी के ये गुण समस्त संसार को ज्ञात होने चाहिए। आशीर्वाद, बेटा सोमेन्द्र।

हे पुत्री! ऋचा, मनुष्य द्वारा यज्ञ छोड़ देने की अनन्त हानियाँ हैं, यह चारों वेदों में आपने सुना है। आप कोई एक मुख्य हानि बताओ।

ऋचा– हे आचार्य! प्रणाम। जैसा कि आपने कहा, यह आपका कटु सत्य वचन ही है कि मनुष्य द्वारा यज्ञ छोड़ देने पर अनन्त हानियाँ हैं और मनुष्य इसके बिना सुख–चैन से जी नहीं सकता परन्तु वेद ना सुनने के कारण, इस रहस्य को महाभारत काल के पश्चात् मनुष्य भूल गए और स्वयं निर्मित मार्ग पर चलने लगे। यही मनुष्य जाति के पतन का वेदों ने कारण बताया है।

पतन का, एक मुख्य कारण यह भी है कि ***यजुर्वेद मन्त्र 2/22*** में ईश्वर ने कहा कि यज्ञ में शुद्ध किया हुआ जो हवि अग्नि में डाला जाता है, वह आकाश में वायु, जल और सूर्य की किरणों के साथ रहकर, इधर–उधर जाकर आकाश के सब पदार्थों को दिव्य गुणों से युक्त बनाकर निरन्तर प्रजा को सुख देता है। इस सुख को, यज्ञ ना करके, मनुष्यों ने मनुष्यों से छीन लिया। कहते हैं– ***''नानक दुःखिया सब संसार।''***

इसलिए इस मन्त्र में परमेश्वर ने कहा कि सब मनुष्य उत्तम सामग्री एवं श्रेष्ठ साधनों से यज्ञ का नित्य अनुष्ठान करें। प्रथम यज्ञ में होम करने योग्य द्रव्य को घी में मिलावें फिर बारह महीने निरन्तर अग्नि और वायु आदि के सहयोग से उसे अन्तरिक्ष में स्थित करें। यह प्रजा के लिए अति सुखदायक है। अतः मनुष्य के सदा दुःखी रहने का मुख्य कारण परमेश्वर ने ***यजुर्वेद मन्त्र 2/23*** में यह कहा कि जो मनुष्य ईश्वर से वेद के द्वारा आज्ञा किए हुए व्यवहार/कर्म को छोड़ देता है वह सब सुखों से हीन होकर, दुष्ट जनों से पीड़ित हुआ सदा दुःखी रहता है। तथा ईश्वर भी उसे दुःख देने के लिए छोड़ देता है।

आचार्य– शाबाश, बेटी! अति उत्तम उत्तर दिया। आज के युग में, पुरातन काल की तरह, वेद सुनने की अति आवश्यकता है।

इसीलिए ईश्वर ने सामवेद मन्त्र ५० और अन्य कई वेद मन्त्रों में मनुष्य को वेद सुनने की आज्ञा दी है।

अथर्ववेद के पहले काण्ड में तो परमात्मा ने मनुष्यों को उपदेश दिया है कि हे मनुष्यों! मुझसे प्रार्थना करो– ***''श्रुतेन मा वि राधिषि''*** अर्थात् हे परमेश्वर! हम वेद सुनना कभी ना छोड़ें।

हे पुत्र! ओमेन्द्र, पशु की हिंसा के विषय में आपके क्या विचार हैं?

ओमेन्द्रः– प्रणाम, आचार्य! वेद का ज्ञान ना सुनने के कारण विश्व में कई प्रकार की हिंसा का बोल–बाला है। यह कटु सत्य हमें समझना चाहिए कि किसी की हिंसा किए बिना मनुष्य को सुख नहीं मिलता और हिंसा उस

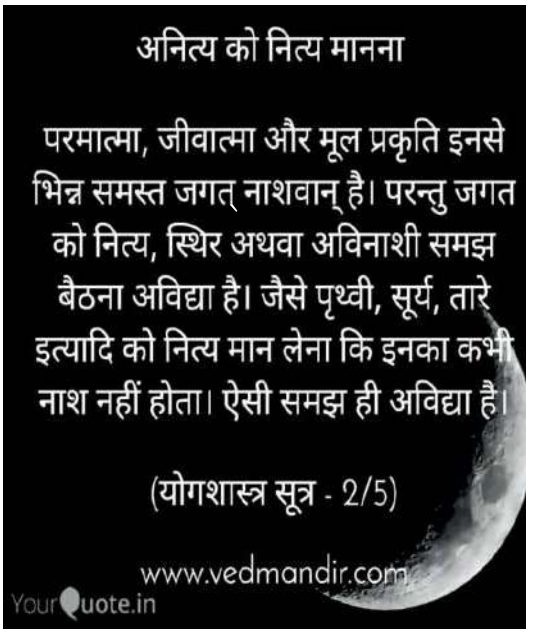

मनुष्य के लिए पापयुक्त हो जाती है। पशु की हिंसा और भी दुर्भाग्य पूर्ण है क्योंकि ईश्वर ने ***यजुर्वेद मन्त्र 13/47*** में स्पष्ट कहा है कि कोई भी मनुष्य उपकारक पशुओं की हिंसा ना करे। किंतु इनका पालन करके, इनसे उपकार लेकर सब मनुष्य आनन्दित रहें।

जिन जंगली हिंसक प्राणियों से पशु, खेती और मनुष्यों को हानि हो उनका राजपुरुष हनन करें और उन्हें पकड़ें।

ईश्वर द्वारा इतना उत्तम उपदेश, वही जीवन में धारण करेगा जो वेदों द्वारा प्रथम ईश्वर द्वारा जानेगा कि ईश्वर किसे कहते हैं। और वही मनुष्य पुण्यवान् होकर, ईश्वर के नियमों को समझकर तथा उन पर चलकर विश्व में श्रीराम, श्री कृष्ण, राजा हरिश्चँद्र, पांडव इत्यादि अनेक राजाओं की तरह जगत् में विख्यात होगा।

आचार्य– शाबाश, बेटा ओमेन्द्र। अति उत्तम उत्तर दिया है।

VTV

Correspondence between Swami Ram Swarup 'Yogacharya' & Late S. Khushwant Singh Ji

(Continued)

(on the subject of Atheism & Casteism etc.)

Original Letter

KHUSHWANT SINGH

49-E, SUJAN SINGH PARK
NEW DELHI-110003

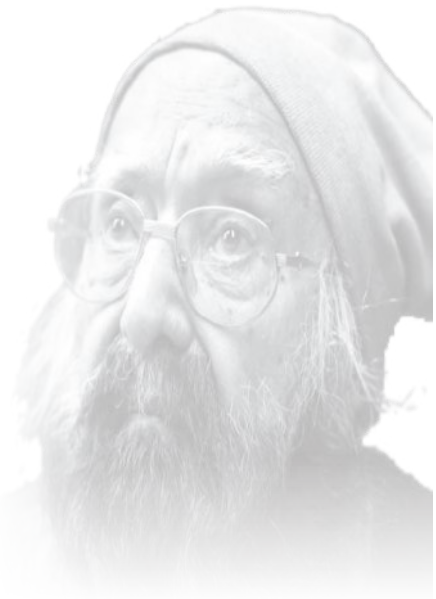

Sh. Khushwant Singhji,
E-49, Sujan Singh Park, New Delhi-10003

Dear Swamiji,

I did not get your letter of 6th December and am glad, you sent me a repeat. I have been bothered by the contents of some purannas. I have come across particularly one called Bhavishya Puranna. A fellow called Dr. Zakir naik often refers to it as Quran. He is a learned from Pakistan and muslim doctor who has taken to spreading Islam. According to him, Bhavishya Purann written long time before the advent of Prophet Mohammad, forecasts the arrival of followers of …….. (Mohammad's home) who will be called…….. and spread Islam throughout India. I have never heard of this Puranna or its prophecy. I know several spurious views including…….. Some sakhi current amongst Sikhs which are entirely spurious. Jayalalitha C.M. of Tamil Nadu. Who ……..some ancient pothi forcasting her future as "Queen of India". I think they are laughable stuff. But millions of people believe in them.

I trust you are in good health. I wish you the best for 2006.

Your's
Khushwant Singh.

Most Respected Shri Khushwant Singhji,

Namaste,

While dispatching the letter, I happened to read your valuable article dated 14th January 2006 in HT and quick and short comments therein are being sent to Your Excellency for perusal please.

Again and again I thank you a lot for your recent article published in HT, dated 14th January 2006.

Yes, please in ***Yajurved mantra 22/9, 30/2, Samved mantra 1462, Yajurved mantra 3/35, Rigved mantra 3/62/10, the first line i.e., OM Bhuhu Bhuwaha Swah does not exist. The first line only exists in Yajurved mantra 36/3. But in Manusmriti shlokas 2/51, 52 and 53, it has been stated that Om Bhuhu Bhuwaha Swah being the names of Almighty God, must be recited along with the next three parts of Gayatri mantra. So, everybody always starts Gayatri mantra with Om Bhuhu Bhuwaha Swah and it is right to.***

In every Yajurved mantra quoted above, the subject matter of mantra is ***"Savita".*** Savita means the creator, GOD. All mantras pertain to the subject of worshipping God. So in Upnishad and other places, the meaning of Bhuhu Bhuwaha Swaha pertains to the holy names of God.

Yajurved mantra 36/3 also draws attention to-

Bhuhu- Karmavidya i.e. knowledge of what pious deeds are to be done.

Bhuwaha- Upasana vidya i.e. knowledge how to worship.

Swah- Gyan Vidya i.e. knowledge of science/matters.

Vedas are complete with said knowledge and Vedas state that the person who becomes perfect to attain the said knowledge from four Vedas and follows it in practice, is the one who realizes God. So, Bhuhu, Bhuwaha and Swah pertain to the holy name of God.

Further Sir, the meaning of the word ***"Hari"*** according to ***Samved mantra 562*** is ***"smoke coloured", Samved mantra 623*** states that Hari means ***"like a horse".*** In ***Atharvaved mantra 20/30/1,*** the word ***"Hari"*** has been used for power which liberates from sorrows saying- (Mahe) Great (Vidthe) amongst the society (Te) your (Hari) power to liberate from sorrows (Pra shansisham) I admire.

i.e. O warrior! I admire your power which liberates the society from sorrows. So, here the meaning of Hari is the power to liberate from sorrows.

Then ***Yajurved mantra 33/2*** says O Man! (Dhoomketavaha) that which gives

the indication of smoke i.e. Agni (Vaaj jootaha) that which is ignited by air i.e. Agni (Hari) that which transports materials to several places i.e. Agni (Agnayaha) fire (Vrithak) i.e. separate (Dyavi) in the light (Upyatante) they strive i.e. O man! that which gives the indication of smoke (Agni), which is ignited by air, which transports materials to several places (Agni), that fire in the separate light of sun strives.

Idea of Mantra- is when any material is put in burning fire then the fire, duly inspired by air and with the help of rays of sun, carries the matter to several places in the space. Agni enables the matter to be spread in the space through air and sunrays in space.

There are so many mantras in Vedas where the word Hari has been used, the meaning of which is to be considered according to the situation based on Devata (subject matter) of the mantra. But Hari word has not been used for holy name of God in Vedas. So, I think, only chanting of OM will serve the purpose.

Thanking you Sir, with all good wishes.

Yours sincerely,

Sh. Khushwant Singhji,
E-49, Sujan Singh Park,
New Delhi-10003

Swami Ram Swarup
Ved Mandir, Tikka lehsar,
Yol Bazaar, Yol Camp,
16-1-2006

Most Respected Shri Khushwant Singhji,

Namaste,

I hope this letter finds you in the best of your health. I received your loving letter dated 14th dec,2005 on 6th January 2006. I felt a personal pleasure to read your valuable views to bless me-'most impressed' for which I thank you a lot and feel highly obliged.

In my previous letter, I am sorry for not explaining about ***Sau Sakhi. There are eighteen puranas like Bhagwad, Bhavishya, Matasya, Devi, Vishnu, Shiv, Skandh, Garud puran etc., in which 99.999% stories are false because the stories are not based on science and truth.*** Therefore, the stories which are not based on science, naturality, logic, laws governing universe, then such stories can't be accepted as true. For example, when anyone's head is cut off, the same cannot be reinstated. Further, the sun rises from east and sets in the west. Suppose, one starts telling that he or his Guru Maharaj has stopped sun from setting by their own power to bless someone, so, it is not acceptable. But purannas have told such stories. Hence,

unscientific, illogical stories are not true. the stories like those of Prahlad where it is stated that Prahlad embraced red-hot pillar but did not meet with death or Narsingh avatar came for his rescue or God Vishnu was flying on Garud and rushed to the banks of river to rescue the elephant from crocodile etc.etc. are not acceptable.

Sir, a kind-hearted person is moved by the pitiable condition of humans, animals and birds other than him and even helps them to mitigate their sufferings. Such person places the soul of others at the same pedestal as his own soul. This mental conditioning proves the existence of soul as well. Hence, even if someone does not believe in the existence of God but believes in the existence of soul of others is a kind-hearted person, he feels pity on people who are unhappy and befriends those who are happy, then his own life becomes happy and peaceful by such act.

Atharvaved mantra 10/8/25 and 16/3/5 state that soul is an alive matter and even smaller in size than the front part of hair. ***Shvetashvaropnishad*** states that if the front part of the hair is divided into hundred parts and the single part again divided into hundred parts, then the soul is of the size of just one part so obtained at the end.

Even non-alive world like jeevatma exhibits motion. However, motion of soul is eternal. Hence, soul strives hard. It struggles for existence, for food, shelter and if has gained knowledge then strives to do hard work. Soul harbours natural qualities like desire, hatred, happiness, sorrow, knowledge, (limited knowledge) etc. and all souls possess such qualities whether in the body of humans, animals, birds etc. Spiritualism too states that those who do hard-work but neither do true worship nor gain knowledge, they are unable to realise God or the true nature (swarup) of soul. Each soul possesses limited knowledge and and limited power. And when the soul acquires body and senses in mother's womb, then after attaining knowledge, the soul is able to determine truth and distinguish it from falsehood, otherwise not. Till the time soul realizes its true self, then whether it occupies the body of a king or a rich person or a poor person, it is forever subjected to sorrows, problems and some or the other shortcoming in life.

The ability of the soul to determine truth and falsehood and to act accordingly is also proved by the following incident of Ibrahim Lincoln's life. Lincoln was practicing law those days. One man came to him with certain documents regarding his case. ***Lincoln*** studied the documents thoroughly and then told the man clearly that his case was not a genuine one. It could be won by using legal technicalities but not on

the basis of truth. ***Lincoln*** advised the man to hire the services of some other advocate who had no inhibition in fighting false cases because Licoln's inner conscious would throughout remind him that he is fighting a false case and it was quite possible that he might even declare so in the court and the client would loose the case.

Recently, a group of scientists has come together and is totally committed in making experiments about the existence of soul. ***American scientist Macdougal*** has made leading contribution in this direction. He experimented on patients who were at the verge of meeting death. Such patients were made to lie down on specially designed beds equipped with ultra sensitive weight measuring gadgets. As soon as the patient died, the indicators of gadgets showed movement and the body weight reduced by an ounce. The experiment was repeated with great accuracy several times and each time the measurement was the same. ***Macdougal*** came to a conclusion that definitely there is a minute (suksham) matter within the body that can be considered as the basis of all life activities within an organism.

Dr. Gates too has made certain experiments in this direction. He concluded that immediately dead organisms emit certain infra-red rays through their eyes. Dr. Gates kept certain mice (which were about to die) in a glass and exposed the mice to infra-red rays. The shadow of mice was received on the screen especially coated with some material as soon as the mice died, a shadow was traced to rise high up the screen and then it vanished away. Now, there was no shadow on the screen. He observed that the body of dead mice had become transparent (non-receptive, non-absorbent) to infra-red rays. Dr. Gates wondered that what exactly escaped from the body in the absence of which the body lost its effectiveness. This can be elaborated through "Wilsa Cloud Chamber experiment." ***"Wilsa Cloud Chamber"*** is a hollow, transparent cylinder. Vaccum is created within cylinder and the cylinder is coated with a special chemical material which creates a bright, foggy atmosphere within the cylinder. The chamber is fitted with an ultra sensitive camera on the outer surface.

Some alive mice and frogs were transferred into the chamber and then during the experiment, they were killed by giving electric shocks. The camera which captivated all the activities within its film showed a shadow (form) that escaped from dead body of mice. The scientists attribute the existence of some matter (minute/micro) within the body which is responsible for all life activities within an organism.

Sir, I think, I have written a scientific experiment about the existence of soul.

(here soul does not mean God). In ***Rigved mantra 7/34/9, 'Yamen'*** word is used for God. In ***Atharvaved mantra 8/8/11, "Yamdootaha"*** word has been used which means, Yama- God; Dootaha- controller who brings about death by means of wind storms, floods, torrential rains, earthquakes, epidemics etc. So, there is no Yamraj or Yamdoot mentioned in stories (sakhis) of eighteen puranns etc. God has no assistant being Almighty so soul is taken out from the body of air called "Sutratma" otherwise soul remains unconscious when is taken out by air. So the photos of the dead mice and frogs are of their bodies and not soul. But the soul goes out from the body crossing the shadow. So Yam Himself is God Who has been called air(Yam) also in other mantras.

According to Vedasand BhagwadGeeta, the meaning of "Varnasankar" is as under:-

Geeta Shloka 1/41:-

"Adharmabhibhvaat krishnn Pradushyanti Kulastriyaha
Streeshu Dushtasu Varshnneya Jaayate Varnasamkaraha."

(Krishanaha) O Krishna! (Adharmabhibhvaat) due to increase in immorality and unrighteousness (Kulastriyaha) well born females of noble descent and commanding high respectability (Pradushyanti) when get corrupted then (Streeshu) to such women (Dushtasu) as a result of the presence of sins and immorality (Varshnneya) O Krishna! (Varnasankar) hybrid progeny [mixture of castes] (Jayate) shall be born.

i.e.,O Krishna! Due to increase in immorality and unrighteousness, well born females of noble descent and commanding high respectability when get corrupted then to such women, as a result of the presence of sins and immorality, O Krishna! hybrid progeny which is mixture of castes will be born.

Geeta Shloka 1/42 :-

"Sankaro Narkayaiv Kulaghnanaam Kulasya Cha
Patanti Pitaro Hayesham Luptapindodakkriyaha."

(Sankaraha) hybrid (Kulaghnanaam) brings about downfall of family (Cha) and Kulasya subjects the family to (Narkaya Ev) all sorrows, miseries etc. hence (lupta) have vanished away whose (Pind) food (Udak) water (Kriyaha) behavior, dealing (Esham) their (of hybrids) (Pitaraha) respectable elders (He) definitely (Patanti) are immersed in deep sorrows and miseries. i.e.

Hybrid brings about downfall of family and subjects the family to all sorrows, miseries etc. Hence have vanished away whose food, water, behavior, the respectable

elders of such hybrids are definitely immersed in deep sorrows and miseries.

Idea of the shloka:- Arjun attributes destruction of eternal Vedic culture as the main reason behind arising of hybrids or mixed caste breeds as future generation. Here mixed caste breed means the change of eternal philosophy of vedas are mentioned in ***Yajurved mantra 31/7*** mentioned below i.e., the learned wives and girls if are forcefully carried by dacoits, thieves and other bad charactered persons then the women will have to follow them (bad people). Women will have to lose the daily routine of telling truth, mercy, donation, help the poor, to make the country strong, serve the elders etc., etc., because the women will forcefully have to obey such man, this is called varnnasankar mentioned in Geeta, otherwise vedas, Shastras, true granths say that shudra can be Brahmin and vice-versa according to their own (pious or unpious) karmas and Arjun clearly says in shloka 1/41 that it only happens when sins are increased and Arjun did not raise question of caste, please.

Great famous Markande, Vamdev, Kashyap and Gautam Rishi in Valmiki Ramayan also state that due to degeneration in observance of eternal Vedic culture, females no more stay at home, they loiter around and have become characterless.

Atharvaved kand 2, sukta 14 elaborates that such characterless females are instilled with vices like resorting to create division in the family by fighting, creating an atmosphere of fear and disrespect in the family, are rude and harsh speaker, obstinate, always devouring i.e., untimely voracious eater. Forever exhibiting anger, are talkative etc. Such females completely destroy the happiness which is generated by acquisition of knowledge. Vedas state that those ladies who follow the eternal Vedic path in discharging their family duties are worshippable, they are comparable to dawn i.e., are bestowed with divine qualities of dawn such as they brighten the fortune of their family, are the strength of family and increase the wealth , further such ladies are perennial source of happiness to family are laborious workers and perfect in household jobs, pursue study of Vedas, are polite speakers and are equated to God in Vedas.

Last three Vedic periods- Satyug, Treta and Dwapur have witnessed such great ladies possessing such divine qualities e.g. Sita, Madalsa, Savitri etc.

Hence, deep study of Vedic culture reveals that placing of any male or female on high pedestal was based on their individual effort to observe Vedic teachings in their lives. Vyas Muni states in Mahabharat-

"Dharmann Heenaha Pashuhu Samaanaha"

i.e., those who are devoid of eternal Vedic teachings lead animal like existence despite being woman. When there is great mention of Vedas, we must reckon that fact that Vedas are eternal whereas present (including the granths) have originated within two thousands years. If I speak about Vedas, then I also speak about all those true granths which have all true references of Vedas therein.

Bhagwad Geeta is related to Vedic period. ***Arjun*** was the philosopher/ knower of Vedic teachings which were bestowed on him through his ancestors and Rishis yet he had not out them into practice completely. Here his point of view is very deep and serious that if all the warriors meet with death then women who are left behind shall not be able to remain committed to the tenets of eternal Vedic culture and flaw/defect of varnnasankar or hybrid progeny shall naturally arise in the society from those women. i.e. there shall be degeneration of females from human values. To elaborate, the code of conduct as per Vedas, laid down by ***King Manu*** in the beginning of the creation of earth, regarding marriage, food habits, speech, Brahmacharya, respect to elders, Yagya, Yogabhyas, purity etc. shall all perish away. As a result, the females who are deviated from religion and infested with defect of varnnasankar, shall marry anyone, fulfill their unpious wishes, cross their limits, abandon eternal Vedic qulaities and harbor lustful desires. The children bornout of such females shall not have pious sanskars, not follow religious principles and will not obey and serve their elders. These vices in turn shall be instrumental in destroying the prestige and glory of family.

Varnasankar means downfall/degradation of a female from human values. Subjecting elders to narak means subjecting them to sorrows and miseries, when they are alive. It is most painful for elders, when there is no one to serve them with food, water, shelter, respect or polite speech and they are immersed in deep sea of miseries, pain while they are alive. Arjun is reminded of eternal definition of Yagya wherein yagya word owes its origin from the root ***"Yaj"*** meaning Dev Pooja, Sangatikaran and Daan which means continuous service to alive parents, guest (learned of vedas, Shastras, True Bani), Acharya and God etc. here, "Pind" word given in this shloka cannot imply offering of food etc. to dead parents and ancestors since Vedas categorically direct to do service to alive parents and to dead. ***Yajurved mantra 2/32*** states ***"Pitraha, Rasaya, Shoshaya, Jeevaya, Swadhayai"*** etc. and further states that alive learned persons, who bestow eternal happiness of knowledge on us may receive our humble namaskar and shower their blessings/benedictions in the form of removing our sorrows, annihilating our

enemies, giving long life, food, justice and all happiness on earth.

Further, ***Yajurveda chapter 39*** proves the fact that dead cannot be offered food through Pinddaan, shradh etc. since dead body is burnt and remains of ashes mix with atmosphere and all its organs are completely destroyed. Only the soul (for those who believe) which resides in that body comes out and takes another body in next birth.

Hence, it is a Vedic truth that due to lack of following eternal Vedic culture, progeny of corrupted females shall not even offer water to elders, what to talk of giving respect to them. Arjun is afraid that elders who deserve to be served in such circumstances, shall be immersed in sorrows and miseries while alive and lineage of future generations can no more be determined if war takes place and warriors die.

Hence, at present too, Geeta's teachings need to be followed like Arjun and all countrymen should seriously and whole heartedly serve alive parents, grand parents, brothers, friends, elders with food, water, money, clothes, sweet speech, respect and shelter. As a result of putting into practice the eternal Vedic culture, they will earn punya (result of pious deed) and remain forever happy. (if anyone wants to be happy then one must do the pious deeds to make others happy)

Geeta shloka 1/43-

"Doshairetaihi kulaghnanaam varnasankarkarkaihi,
Utsadyante jaatidharmaha kuldharmashchshashvataha."

(Kulaghnanaam) those who bring disgrace/dishonor to their family and destroy its (varnasankarkarkai) due to their flaw of varnasankar (shashvataha) eternal (Kuldharma) family tradition and honour (Cha) and (Jaatidhatmaha) community obligations (utsadyante) shall be destroyed.

i.e. those who bring disgrace/dishonor to their family, due to their flaw of varnasankar and destroy its eternal family tradition and honour and community obligations shall be destroyed.

Idea of the shloka- Arjun projects his doubt in ***shloka 41*** that if all the warriors meet with death then ladies left behind shall be contaminated i.e. not remain pure which in turn will give rise to a new generation of mixed breed causing destruction of lineage and community. Such characterless ladies will act willfully/arbitrarily fulfilling their unpious desires; no male who deserves to get married (have their worth according to their qualities) will be left and wicked persons might forcefully abduct girls and

ladies. Hence, there shall not be distinct division of community on the basis of deeds into Brahmins, Kshatriyas, Vaishyas and Shudras as per ***Yajurved mantra 31/11.***

Kindly reckon this fact that neither Vedas nor Geeta advocate caste system infact the mantra clearly states that categorization is strictly based on deeds and not on birth. Those who harbor best qualities like knowledge of Vedas, realization of God, observe Brahmacharaya (celibacy) are the Brahmins (those who donot possess such qualities even if born in Brahmin family cannot be considered Brahmins if they do sins) further those wielding strength and power and are capable to protect the nation internally and externally are called Kshatriyas; those who are expert in farming, animal husbandry, public dealing and are capable of distributing goods and services equitably in the nation are Vaishyas and those who lack knowledge but are expert in serving, are the shudras.

Hence, progeny of illusion infested males and females would also be like its parents and will not be capable of repeating the pure conduct, sacrifice, tapasya, glory etc., divine qualities of their ancestors. Further uncontrolled marriages (without considering the qualities and caliber of bride and groom) shall destroy the eternal tradition otherwise conserved through disciplined conduct, valour, bravery, brahmacharya (chestity), discipline, politeness, justice, true and eternal worship of God, Yagya, service to parents and elders, donation to deserving ,simple and honest conduct. This is the destruction of tradition of community and society referred in shloka.

Great war of Mahabharat has completely annihilated the eternal Vedic tradition and culture that was so much in vogue during the time of Manu, Yayati, Harishchandra, Dashrath, Sri Ram, Yudhishthir etc. (i.e. Satyug, Treta, Dwapur time period.)

The painful period of indo pak partition led to horrible condition when forcibly girls and females were taken to Pakistan or muslim girls brought to India and even Aurangzeb did the same and forcibly converted Hindus into muslims and destroyed the lineage of so many families.so even today if under the effect of lust or money, girls or boys marry in any community, keeping aside good qualities, then it is all referred to as varnasankar flow.

Last but not the least, most of the stories have been concocted by the so called saints to push innocent public into blind faith where there is no scope for reasoning or rationality to live upon. For example, one says ***"God is everywhere", so this is fundamental.*** But how can one be able to experience the truth in routine, it is

another deed to be done lie control on senses and good conduct under guidance of a complete Yogi, who knows four vedas and ashtang Yoga in experience but what happens is that so called saints on television and elsewhere will say the same preach and immediately will start telling false sakhis of Bhagwad puran that Sri Krishna Maharaj was in Mathura and CheerHaran of Draupadi took place in Hastinapur near Meerut. When Draupadi prayed to Sri Krishna to help her, then Sri Krishna Maharaj from Mathura started increasing the length of her saree and they will prove that Krishna is everywhere and that he is God.

Another story often narrated to prove that God is everywhere and faith mountains is – there was a brahmin who worshipped a saligram (a piece of stone). Once the brahmin had to go somewhere. He gave the stone to an illiterate, ignorant, low caste Dhanna to worship in his absence. When Dhanna tries to give the food to the saligram, the stone did not consume the same. On this Dhanna also stopped taking food with a determination that till the time saligram accepted his food, he would not eat his meals and remain hungry. Finally Sri Krishna Maharaj appeared in the stone and gave him Darshan and accepted his food.

This false story has helped to popularize idol worship.so the motto of narrating unnatural, false stories is to inculcate blind faith within people on false worship against vedas, so as to lure money out of them. Trend of people has thus been made by so called saints "chamatkaar ko namaskar". So most of the false stories are chamatkari.

However, I would like to bring to your kind notice the fact that ***in vedas there is no scope of miracles and false stories.*** There is no mention of any story in vedas and vedas only contain fundamentals for the universe to obey. Stories are history which are related to past whereas knowledge of vedas being fundamental is forever applicable i.e., past, present, future equally and universally.

For instance, the meaning of Yagya in vedas is to serve the parents, elders. So it is always applicable. The knowledge of science, electronics, family, agriculture, politics etc etc., mentioned in vedas is always applicable not only to humanity but to whole universe.

Sir, I always thank you a lot for giving your valuable time for showering your blessings in the shape of your precious views.

Yours sincerely,

Swami Ram Swarup 'Yogacharya'

पति के कर्तव्य

शीतल गुप्ता

ज़िन्दगी एक नाटक मंच है, हम सब इस नाटक के पात्र और अपनी–अपनी भूमिका निभा रहे हैं। अगर अपनी भूमिका का सही वैदिक ज्ञान हो तो भूमिका हम अच्छे से निभा सकते हैं अगर न हो तो असीम गलतियाँ करते हैं और मन ही मन प्रसन्न होते हैं कि हम ठीक भूमिका निभा रहे हैं और दूसरा गलत है। वेद ईश्वरीय वाणी है जो हम ऋषियों के मुख से ही सुन सकते हैं अन्य किसी से नहीं इसलिए हम सही हैं या गलत उसका प्रमाण हमें सदा वेदों से लेना चाहिए। पिछले लेख में मैंने नारी के (पत्नी के कर्तव्य) के बारे में लिखा था इस लेख में पति के क्या कर्तव्य हैं वह लिखने की कोशिश करने लगी हूँ।

इस लेख में मैने जो अपने माता–पिता को देखा, जीवन में देखा और सबसे अधिक अपने आचार्य का ज्ञान और उनकी पुस्तक 'Vedas Divine Lighit Part-3 से बहुत–बहुत मदद ली है। लेख में कहीं भी गलती के लिए आचार्य से क्षमा चाहूँगी।

मेरे ***आचार्य स्वामी राम स्वरूप जी*** धरती पर ईश्वर की पहचान, वरदान हैं, वह ईश्वर का स्वरूप, योगी, तपस्वी, अष्टाँग योग के ज्ञाता महान् महर्षि हैं। हम सबको कोशिश करनी चाहिए हम ऐसे महान् ऋषियों के दर्शन करें और उनसे ज्ञान प्राप्त करके आचरण में लाएँ।

पुरुष के गुणों का ब्यान ऋग्वेद, अथर्ववेद से किया है। पुरुष शब्द का प्रयोग यहाँ पति की भूमिका के लिए है।

ऋग्वेद मंत्र 10/85/17

पुरुष (पति) का कर्तव्य है वह वेदों के ज्ञाता आचार्य, अपनी पत्नी और बच्चों की ज़रूरतों को पूरा करे। धन कमाने का सिर्फ यह मतलब नहीं है कि खाओ, पियो और संसारिक पदार्थों में खो जाओ।

अथर्ववेद 1/34/5

पति का व्यवहार पत्नी के प्रति मधुर और प्यार भरा होना चाहिए।

अथर्ववेद 2/30/4

पुरुष को पत्नी से कुछ छिपाना नहीं चाहिए इस तरह वह अपनी पत्नी का दिल जीत लेता है।

अथर्ववेद 5/25/6

पुरुष को अनुशासन वाली और पवित्र ज़िन्दगी व्यतीत करनी चाहिए।

अथर्ववेद 6/9/2

पुरुष प्यार से अपने व्यवहार से अपनी पत्नी का दिल जीते।

अथर्ववेद 6/81/1

पुरुष (पति) को अपनी मर्यादा में रहना चाहिए और इतना धन कमाना चाहिए जिससे घर का निर्वाह अच्छे से हो सके।

अथर्ववेद 6/89/1

पति को अपनी पत्नी का आदर करना चाहिए और उसे अपना कर्तव्य समझना चाहिए कि वह समाज में अपनी पत्नी का सम्मान बनाए रखे।

पति को ऋषियों, मुनियों का आदर करना चाहिए, माता–पिता, बड़ों की सेवा करनी चाहिए। पति घोड़ें की तरह परिश्रमी होना चाहिए और आलसी वृति, झगड़ालु नहीं होना चाहिए। पुरुष योगाभ्यास करने वाला, स्वस्थ शरीर वाला, दृढ़ संकल्प वाला, नाम सिमरन करने वाला, सुबह–शाम अग्निहोत्र करने वाला, ईश्वर में, अपने आचार्य में आस्था रखने वाला, वैदिक पुस्तकें पढ़ने वाला, वैदिक प्रचार करने वाला, परिवार को आगे बढ़ाने वाला, बहादुर, बलवान्, पौष्टिक और सात्विक भोजन करने वाला होना चाहिए। डरपोक और कंजूस वृत्ति वाला नहीं होना चाहिए। देव पूजा, संगति करण, दान प्रवृति वाला होना चाहिए।

गृहस्थ को चलाने वाले दो पहिये हैं नारी और पुरुष। दोनों को बहुत ही नियम संयम में रहना पड़ता है, सुखी गृहस्थ को चलाने के लिए जिस तरह नारी पति का सहारा बनता है और उसके घर को, घर वालों को अपनाती है उसी तरह पति को भी अपनी पत्नी की मन की दुविधा को समझना चाहिए। मधुर भाषा से, क्रोध त्याग कर पति–पत्नी के सम्बन्ध से सूरज की रोशनी जैसा प्रकाश और चंद्रमा जैसी शीतलता होनी चाहिए, चेहरे पर एक दूसरे के लिए खुशी झलकनी चाहिए और दिल की गहराइयों से लगाव होना चाहिए। बिना किसी स्वार्थ के ऐसे गुण पुरुष में तभी आ सकते हैं जब माता–पिता खुद भी संयमी हों और अपने बच्चों को आचार्य से समय–समय पर वैदिक शिक्षा दिलवाते रहें। VIV

Sapna Dogra

IS THE KEY TO A HAPPY LIFE

"To err is human and to forgive is divine "- We all have heard and used this saying at least once in our life. However, most people do not really understand the real meaning of this proverb before uttering it.

Erring means making a mistake or an error. It is human nature to make mistakes because nobody is perfect, but not everyone forgives. ***Remember, happiness comes to those who have extreme patience and ability to forgive and forget.*** Such people have inner happiness and it reflects in their demeanour.

Sometimes, we also hurt the feelings of our friends/relatives/parents knowingly or unknowingly, but find it very difficult to seek forgiveness for our words or actions.

People have this tendency of noticing and highlighting others' smallest of mistakes, but overlook their own big mistakes. The small errors or mistakes are blown out of proportion, sometimes for selfish reasons. The person who makes the mistake is made to feel guilty and sad. What is really needed in such circumstances - pardoning or forgiveness.

Forgiving will give a feeling of happiness to the person who doesn't hold grudges and forgives his/her enemies.

It is certainly not easy but if one keeps trying, forgiveness becomes your second nature and you will experience peace and harmony in your life. This is the way to achieve happiness and a fulfilling life. All religions exhort the virtues of forgiveness. For instance, ***the concept of Kshama is part of one of the yamas, or restraints, which are mentioned in***

several scriptures including the Shandilya and Varaha Upanishads and the Hatha Yoga Pradipika by Gorakshanatha.

In Jainism, there is a 'Forgiveness Day' or Kshamavani (Sanskrit: Kṣamāvaṇī), in which ***followers of Jainism seek forgiveness and forgive others.***

Digambaras celebrate it on the first day of Ashvin Krishna month of the lunar-based Jain calendar. Śvētāmbaras celebrate it on Samvatsari, the last day of the annual Paryushana festival.

Also, July 7 is celebrated as the Global Forgiveness Day to make people learn and imbibe the art of forgiveness for a peaceful life. Resentment and ill feelings make a person unhappy and irritable.

In order to heal, we must forgive others in our hearts who have hurt us. Forgiveness helps us to break ourselves away from the demons of the past so that we can experience happiness again.

Experts/therapists also say that those who forgive easily live a happier life than those who keep grudges and resentments in their hearts. If one keeps negative feelings about someone then there will never be happiness or contentment in life. ***Life without happiness makes life miserable.***

Studies have shown that a forgiving person is always happier and more productive as he is always at peace. Because by forgiving you are being respectful and kind to yourself.

The need for adopting forgiveness now is more than ever before. Today there are disputes in the name of religion, caste, communities and peace and happiness can only prevail if we forgive or pardon others without any expectations. VIV

विद्वानों के संग से जाना कैसे बुराइयों से छूटें

अंजना दीवान
इंडोनेशिया

**"ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव।
यद् भद्रं तन्न आ सुव॥"**

यज्ञ/अग्निहोत्र के पहले ही मंत्र में हम कितनी सुन्दर प्रार्थना ईश्वर से कर रहे हैं कि हे ईश्वर! दुरितानि–मेरी सारी बुराइयाँ, परा सुव–दूर कर दे और यद् भद्रं– जितने भी अच्छे गुण हैं, आ सुव–मुझ में आ जाएँ। आज संसार की सबसे बड़ी बुराई यही है कि हमने विद्वानों का संग करना और उनके साथ बैठ कर यज्ञ करना छोड़ दिया है। यज्ञ होते तो प्रार्थनाएँ भी चलतीं और हम बुराइयों से छूटने का तरीका भी जान जाते।

21वीं शताब्दी में यहाँ विज्ञान अपनी चर्म सीमा पर है वहीं अपनी सनातन संस्कृति वेद, यज्ञ और ऋषि–मुनि–विद्वानों के संग से हम बहुत अधिक पिछड़ गए हैं जो कि सम्पूर्ण व्यक्तित्व को निखारने में सर्वप्रथम कड़ी है।

हमारी सनातन पद्धति जो अनादि काल से चली आ रही है वो तो यह ही ज्ञान देती रही है कि 6–8 वर्ष की उम्र में बच्चों को गुरुकुल में भेज दिया जाता था और यह बच्चे विद्वान् आचार्य के साथ सुबह–शाम वेद मन्त्रों के साथ नित्य यज्ञ करते, वेद–वाणी सुनते, योगाभ्यास और नाम सिमरन भी करते और भौतिक शिक्षा भी ग्रहण करते थे। 25 वर्ष के बाद जब यह बच्चे गुरुकुल से बाहर आते तो अपने व्यवसाय के साथ इनका आत्मिक संतुलन बहुत सुदृढ़ होता था अर्थात् अपनी इन्द्रियों पर इनका पूरा संयम होता था। आज बच्चों को हम बचपन में ही वैदिक संस्कार की जगह हैन्ड फोन, आई–पैड और दूसरे इलैकट्रानिक गैजेट देकर मार्डन बनाना चाहते हैं। हमारे स्कूल और कॉलेजों में भी आए दिन मार–धाड़, लड़ाई–झगड़ा, अध्यापकों के साथ बद्तमीज़ी से पेश आना, लड़कियों का शोषण, बॉयफ्रेंड–गर्लफ्रेंड इत्यादि हरकतें आम सुनने को मिलती हैं।

कई कालेजों में तो मरने–मरवाने की बात भी सामने आती है कारण यही है कि आज हमने वैदिक परम्परा को तोड़ दिया है। इसमें कहीं हमारी सरकार भी दोषी है जबकि ***ऋग्वेद*** के कई मंत्रों में कहा है कि राजा या प्रधानमंत्री की व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए कि हर विद्यार्थी को भौतिक शिक्षा के साथ विद्वानों से अध्यात्मिक शिक्षा भी पूर्ण रूप से मिले। इसमें कोई शक नहीं है कि आज हमारे विद्यालयों में भौतिक तरक्की को ही अधिक अहमियत दी जाती है जबकि अध्यात्मिक शिक्षा को नाम मात्र ही, जबकि हमारी संस्कृति वेद कहते हैं कि जीवन में सुख तभी मिलता है जब हम भौतिक और अध्यात्मिक 'उन्नति दोनों साथ–साथ करें।'

आज की भौतिक चमक–दमक में हमें यह ज्ञान ही नहीं है कि झूठ बोलना, चोरी करना, गाली–गलौच करना, मार–पीट करना, आलसी होना, क्रोध करना, अहंकार में आकर किसी को बुरा–भला कहना, मन दुखाना, दिखावा करना, राग–द्वेष में किसी का नुकसान करना, मारना–मरवाना इत्यादि–इत्यादि यह सब बुराइयाँ हमारे मन के अन्दर हैं और इन्हीं के साथ पल–पोस कर हम बड़े हो रहे हैं। माता–पिता भी वैदिक शिक्षा के अभाव के कारण और हमारे विद्यालयों में भी विद्वान् आचार्यों की कमी के कारण हम केवल और केवल भौतिक उन्नति की ओर ही अग्रसर हो रहे हैं। इसके लिए चाहे हम कई बार महाभारत और रामायण का पाठ भी सुन लें लेकिन तब भी हम अपनी बुराइयों के कारण को नहीं जान पाएंगे। ज्ञान को तत्त्व से जानने वाले ***मंत्रद्रष्टा ऋषि या विद्वान्*** का संग ही हमें बुराइयों का कारण और इन से दूर रहने के लिए मार्गदर्शन कर सकता है।

विद्वानों की संगत बिन तो मूर्ख ही रह जाएंगे।
विद्वानों का पाकर संग विद्वान् बन जाएंगे॥

यह ***''योगाचार्य स्वामी राम स्वरूप जी''*** के भजन की पक्तियाँ मुझे अत्यंत प्रिय हैं क्योंकि विद्वानों के संग के बिना कोई भी अपने अन्दर की बुराइयों को दूर कर ही नहीं सकता है। विद्वानों के संग बैठ कर उनके साथ यज्ञ करना, उनसे वेदवाणी सुनना और सुनकर उसे आचरण में लाना, उसी से मन की बुराइयाँ दूर होती हैं ***''नान्य पन्थाः''*** इसके इलावा अन्य कोई रास्ता है ही नहीं।

ईश्वर की महान् कृपा है और यह मेरा सौभाग्य है कि ***''मंत्रद्रष्टा ऋषि योगाचार्य स्वामी राम स्वरूप जी''*** का संग हमारे परिवार को मिला और ***यजुर्वेद मंत्र 40/10***

''इति शुश्रुम धीराणां ये
नस्तद्विचचक्षिरे''

इन्हीं ध्यान में लीन योगियों से हर पदार्थ को तत्त्व से जानने के लिए प्रेरणा दे रहा है। आचार्य से ही हमने जाना कि संसार का हर पदार्थ प्रकृति से बना है, यहाँ तक कि हमारा

शरीर, इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि सब प्रकृति से बना है और प्रकृति के तीन गुण हैं– रजो–तमो–सतो गुण। रजो गुण–विषय–विकारी; तमो गुण–आलस, निद्रा, पुरुषार्थहीन; सतो गुण–अभिमान, अहंकार। जब हमारा मन प्रकृति के इन तीन गुणों से बना है तो फिर इसमें विवेक कैसे हो सकता है? अब प्रश्न यह भी उठता है कि हमारे मन और बुद्धि में विवेक या ज्ञान का प्रकाश कैसे हो जिससे प्रकृति के इन तीन गुणों का प्रभाव ना हो और बुराइयों से हम दूर रहें और शुभ कर्म करें। इसके लिए विद्वानों से ही हमनें जाना कि

''बुद्धि ज्ञानेन शुद्धयति''

अर्थात् बुद्धि ज्ञान से ही शुद्ध होती है और वो ज्ञान क्या है?वो ज्ञान ईश्वरीय वाणी वेद है जिसे विद्वानों के मुख से ही सुना जाता है और विद्वान् जन यह वाणी यज्ञ में ही सुनाते हैं और यज्ञ का पहला नियम है ***''देवपूजा''*** अर्थात् माता–पिता, अतिथि (कम से कम एक वेद का ज्ञाता) गुरु (चारों वेदों का ज्ञाता) की तन–मन–धन से सेवा। तन, मन, धन से सेवा तो वही करेगा जो नियम को जानता होगा। अधिकतर आज कल तो अक्सर माता–पिता को बच्चों से डरते और उनके आगे झुकते ही देखा है और दूसरा नियम है ***''संगतिकरण''*** अर्थात् विद्वानों का संग करके उन से विद्या ग्रहण करो और नित्य उसका अभ्यास करो, नित्य, सुबह उठकर ईश्वर के नाम की साधना, योगाभ्यास (यम, नियम, आसन, प्राणायाम....) सुबह–शाम दोनों समय वेद मंत्रों से अग्निहोत्र करें, इससे हमारी इन्द्रियाँ संयम में होने लगेंगी और श्रेष्ठ कर्मों के अनुष्ठान से मन, बुद्धि और चित्त में विवेक होने लगेगा, शुभ और अशुभ कर्मों की, गलत और सही की पहचान होने लगेगी, कोई भी गलत काम करने पर अंतरात्मा से ईश्वर की आवाज़ सुनाई देने लगेगी की मत करो यह गलत है, पाप कर्म है। जब हम इस आवाज़ को गौर से सुनने लगते हैं तो धीरे–धीरे बुराइयों से अथवा बुरे कर्मों से मन दूर हटने लगता है।

मेरे स्वयं का भी यह अनुभव है कि पहले छोटी–छोटी बात पर गुस्सा करना, नाराज़ हो जाना, अपनी प्रशंसा पाने के लिए या अपने को ऊँचा दिखाने के लिए कई बार बड़–चड़ कर बातें करना या झूठ को सच बना कर बता देना, किसी की उन्नति देख कर जलन–सड़न होना, योगाभ्यास में आलस करना इत्यादि अनेक अवगुण थे। शुरु में जब भी आचार्य के साथ यज्ञ करते, वेद सुनते तो यह समझ में नहीं आता था कि कोई इन्द्रियों को संयम में कर सकता है या बुराइयों से दूर रह सकता है। हर छोटी बात के लिए बेइज़्ज़ती और शर्म बहुत महसूस होती थी। आचार्य हर ज्ञान के तत्व को वेद मंत्र से बहुत ही सरल भाषा में समझाते थे और साथ में योगाभ्यास, साधना, अग्निहोत्र, वेदमंत्रों का मनन–चिंतन भी नित्य करने के लिए कहते थे

और जैसे ही थोड़ी साधना, अग्निहोत्र और योगाभ्यास का अभ्यास बढ़ा तो धीरे–धीरे आचार्य का ज्ञान भी बुद्धि में प्रवेश करने लगा और वेदमंत्रों का मनन–चिंतन भी समझ में आने लगा, अंतरात्मा की आवाज़ भी सुनाई देने लगी और मन कई बुराइयों से दूर हटने लगा, चित्त की वृत्तियाँ अन्तर्मुखी होने लगीं और सबसे अधिक मन प्रसन्न और खुश रहने लगा। ***ऋग्वेद मंत्र 1/165/20*** के यह भाव भी समझ में आने लगा कि हर शरीर के अन्दर दो पक्षी रहते हैं एक जीवात्मा जो कर्म करता है और दूसरा परमात्मा जो उस कर्म का द्रष्टा है। अगर जीव पुण्यवान् कर्म करता है तो उसका फल सुख है अगर पाप कर्म करता है तो उस का फल दुख है क्योंकि ईश्वर हर क्षण हमारे हर कर्म को देख रहा है और कर्म अनुसार फल भी निश्चित कर देता है जो समय आने पर हर प्राणी को भोगना पड़ता है।

वेद के कई मंत्रों में ईश्वर हमें पाप कर्म से दूर रहने की और जीवात्मा को पुरुषार्थ एवं प्रगति में लगे रहने के लिए प्रेरित कर रहा है इसलिए सुखमय जीवन के लिए यह बहुत ज़रूरी है कि हम अपनी पुरातन संस्कृति वेद और वेद के विद्वानों का संग करें और उनसे अपने अन्दर की बुराइयों को दूर करने के नियमों को जानें। जिस दिन यह नियम हमें समझ में आने लगेंगे, हमें अंतरात्मा की आवाज़ भी सुनाई देने लगेगी और मन बुराइयों से, पाप कर्म करने से दूर हटने लगेगा और ईश्वर पर भरोसा होने लगेगा।

संपादक के विचार

अंजना बेटी के लेख की प्रथम पंक्ति में ही ज्ञान प्राप्त करने का उपाय बताया है। विश्व को समझना चाहिए कि जब सृष्टि बनती है तो उस निराकार परमेश्वर से ही विद्या का अनन्त भण्डार निकल कर चार ऋषियों में आ जाता है जो आगे मनुष्यों में गुरु–शिष्य के रूप में फैलता है। सत्युग में ही इस ज्ञान को बहुत श्रद्धा से ऋषियों ने अपने अन्दर धारण किया क्योंकि इसके लिए उन्होंने, अपने गुरु की शरण में रहकर वेदाध्ययन, योगाभ्यास और नाम स्मरण आदि द्वारा इन्द्रियों को अपने वश में किया तत्पश्चात् ही उन्होंने वेद–विद्या में वर्णित अनन्त ज्ञान का भण्डार खोला जिसे उनके शिष्यों ने समझा, जीवन में धारण किया। पुनः आगे अपने शिष्यों ने समझा, जीवन में धारण किया। पुनः आगे अपने शिष्यों को गुरु–परंपरा से दान में दिया। उस समय समस्त संसार सुखी था। किसी को काँटा तक नहीं लगता था। दुर्भाग्यवश

महाभारत काल के बाद, यह परंपरा की ईश्वर द्वारा दिया वेद का ज्ञान सत्य है और परमेश्वर ही उन चार ऋषियों का तथा हम सबका प्रथम गुरु है एवं वेद के ज्ञाता, ऋषि ही हमारे गुरु होते आए हैं (मन–गढ़ंत गुरु नहीं); यह अनादि काल से चली आई, सुखों का भण्डार बरसाती आई, सनातन परंपरा टूट गई। अत: संसार पर दु:खों का पहाड़ टूट पड़ा।

विद्वानों से ज्ञान लेने की आज्ञा स्वयं परमेश्वर ने दी है जिसे ऋषियों ने अपने हृदय में धारण किया। फलस्वरूप ही वे ऋषि कहलाए। वर्तमान काल के अनुसार उनका कोई और नाम नहीं पड़ा। ईश्वर ने विद्वानों से ज्ञान लेने की आज्ञा प्रत्येक वेद में दी है। उन्होंने कहीं भी नहीं कहा कि मुझसे ज्ञान लो। उन्होंने तो पृथिवी के आरम्भ में एक बार ज्ञान चार ऋषियों को, बिना लिखे, बिना बोले, दे दिया था। यह रहस्यमयी विद्या/ज्ञान प्रत्येक ऋषि ने अपने शास्त्र में लिख दिया है। जब कोई शास्त्र लिखता–पढ़ता ही नहीं, विद्वानों के पास जाता ही नहीं तो फिर जनता को ज्ञान कैसे होगा? जनता तो अब प्राय: अज्ञान को ही ज्ञान समझ रही है और दु:खी है। इस विषय में सांख्य शास्त्र के मुनि कपिल ने भी अपने ***सांख्य–शास्त्र सूत्र 5/48*** में साफ समझाया है कि चारों वेदों के ज्ञाता, विद्वानों के पास जाओ ऋषियों के मुख से निकला वेद का ज्ञान नाशवान् नहीं है, नित्य है। नित्य का अर्थ है कि जो ज्ञान ईश्वर ने पृथिवी के आरम्भ में चार ऋषियों को दिया था, वह अविनाशी ज्ञान है, नित्य है। क्योंकि यह ज्ञान ऋषियों की इच्छा से नहीं निकलता। आज भी किसी ऋषि के मुख से यदि अपनी इच्छा से यह ज्ञान नहीं निकलता है, वह समाधिस्थ पुरुष है तो वह वही अविनाशी ज्ञान है जो ईश्वर ने पृथिवी के आरम्भ में दिया था। इसे ही वेद कहते हैं। सूत्र का भाव यह है कि ईश्वर निराकार है, उसके हाथ, मुँह–पैर कुछ नहीं होते। क्योंकि ईश्वर का मुख नहीं होता इसलिए वह बोल कर ज्ञान नहीं दे सकता। वह विद्वानों के अन्दर से, विद्वानों के मुख से यह अनन्त ज्ञान देता है। इसलिए भगवान् प्रेरणा देता है कि विद्वानों के पास जाओ, मैं बोलकर तुम्हें ज्ञान नहीं दे सकता। VIV

Flax Seeds

Sugandh 'Sudhi'

Nowadays a new craze in eating has come up and that's about eating different seeds. Grocery stores are flooded with numerous foods tagged as 'Diet foods' and seeds are one of them. Flax seeds are also in high demand these days. People just munch them or mix them with curd, milk, buttermilk, etc., and even use them in ice cream and other puddings to make the topping healthy.

To my total surprise when I discussed about this new trend of flax seeds with my Nani (Kamla Puri), she was amused and explained that these seeds have been established by Ayurveda many years before. She described that flax seeds are known as ***Alsi seeds*** and have numerous health benefits.

Flax seeds have tempting properties which are very good for digestive health. Omega-3 is the foremost and most important nutrient of flax seeds. These seeds have special benefits for cardio health.Flax seeds are said to be a brain booster, Improve digestion, Maintain skin health and increase overall strength.

It has also been established in preliminary studies that eating flax seeds help in avoiding stroke, fighting heart-related problems, controlling diabetes, and help in giving a miss to cancer, etc.,

Nutritional Facts of Flax Seeds

Since Flaxseed contains *proteins, vitamins, minerals, fiber, etc. It is also known to be a plant with powers.*

Flaxseeds are said to be the richest dietary source of lignans and contain more lignans than other plant based foods.

The lignans are a large

group of low molecular weight polyphenols found in plants, particularly seeds, whole grains, and vegetables.(Lignan-Wikipedia).

Health Benefits of Flax Seeds

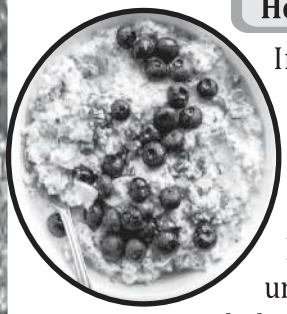

In Ayurveda, Flax seeds are considered a brain and immunity booster. Because of its many benefits, it is considered a must-have in food. Regular but controlled and under supervision consumption helps in controlling diabetes

Weight loss

A lot of people on a diet are unaware of how to take flax seeds for weight loss. The plenty of fiber in flax seeds makes these seeds an ideal and perfect diet food. It not only helps in reducing body fat but also in improving gut health. Flax seeds are fulfilling in themselves, and hence one doesn't feel like eating at quick intervals. Flax seeds this way help control weight.

Arthritis

Flax seeds are full of fatty acids, lignans, fibers, and flavonoids which help in preventing and controlling arthritis, rheumatoid arthritis. Flax seeds oil help in reducing inflammation for those who experience body pain.

Skin and Hair care

Flax seeds have stunning hair and skin benefits as they are full of vitamin E (which is said to be the vitamin of beauty). The antioxidants present in the seeds help in skin tightening and prevent the drooping of the skin. The seeds help to keep skin nourished, hydrated, and moisturized. The Flax seeds oil hair massage not only increases the growth of new follicles but also enhances the hair texture.

Heart-related diseases

Omega-3 and amino acids in flax seeds help to maintain blood pressure, and heart rhythm, through its anti-inflammatory action. Consumption of flaxseed helps in boosting cholesterol levels. It helps to soften the arteries. Seeds help to keep away plaque from getting deposited in the arteries.

Now a major and important question arises that how to consume flax seeds because if these are not eaten/chewed nicely, flax seeds will pass out undigested. Flax seeds are best if taken with yogurt, cereal, smoothies, oatmeal, etc. Flax seeds are known to be energizing the digestive system as seeds encourage and improve digestion. Flax seeds are personified as jewels in Ayurveda because seeds possess the cure for many diseases.

Before taking flax seeds in any form, it is advisable to consult the doctor for better treatment. VIV

Q - Pranam Guruji, Guruji I wanted to know that what are the aasans a student should do besides meditation?

A - My blessings to you. Student should daily perform (both times) Vajrasan, siddhasan, bhujangasan, pashchimauttanasan, uttanpad asan, pawanmukta asan. Such asans are enough to be done daily.

Swami Ram Swarup Ji, Yogacharya

– Know Your VEDAS

YourQuote.in

Q - How to increase bhakti?

A - Bhakti is increased only when an aspirant makes frequent contact with learned Acharya of Vedas and Yoga philosophy. The preach of acharya and the path stated by him if attained by an aspirant then sure Bhakti is increased. Rigveda states if wood is offered in fire then naturally the fire increases similarly when aspirant makes frequent contact to get the holy preach of Acharya then divine knowledge and Bhakti increases.

Swami Ram Swarup "Yogacharya"
www.vedmandir.com

''वेदानुसार कर्म करने का उपदेश''

''कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।।''
(यजुर्वेद मन्त्र 40/2)

स्वामी रामस्वरूप योगाचार्य

मन्त्र में परमात्मा ने मनुष्य के लिए उपदेश किया है कि मनुष्य (इह) इस संसार में (कर्माणि) धर्मयुक्त (वेदानुसार) निष्काम कर्मों को (कुर्वन्नेव) करता हुआ ही (शतम्) सौ (समाः) वर्षों तक (जिजीविषेत्) जीने की इच्छा करे।

(एवम्) इस प्रकार से धर्मयुक्त कर्म में लगे हुए (त्वयि) तुझ (नरे) मनुष्य में (कर्म) अपनी इच्छा से किए अधर्मयुक्त, वेद–विरुद्ध कर्म का (न लिप्यते) लेप नहीं रहता अर्थात् वैदिक कर्म करने से मनुष्य में अधर्मयुक्त एवं वेद–विरुद्ध कर्म (पाप–युक्त कर्म) करने की इच्छा नहीं रहती।

(इतः) इस प्रकार वेदों में कहे कर्मों को करने से भिन्न (अन्यथा) अन्य प्रकार से पाप युक्त कर्म करने में लिप्त बुद्धि (न अस्ति) नहीं होती है।

मन्त्र में परमात्मा ने मनुष्य के लिए उपदेश किया है कि मनुष्य इस संसार में धर्मयुक्त (वेदानुसार) निष्काम कर्मों को करता हुआ हीं सौ वर्षों तक जीने की इच्छा करे।

इस प्रकार से धर्मयुक्त कर्म में लगे हुए तुझ मनुष्य में अपनी इच्छा से किए अधर्मयुक्त, वेद–विरुद्ध कर्म का लेप नहीं रहता अर्थात् वैदिक कर्म करने से मनुष्य में अधर्मयुक्त एवं वेद–विरुद्ध (पाप–युक्त कर्म) कर्म करने की इच्छा नहीं रहती।

इस प्रकार वेदों में कहे कर्मों को करने से भिन्न अन्य प्रकार से पाप युक्त कर्म करने में लिप्त बुद्धि नहीं होती है।

भावार्थः– यजुर्वेद में मुख्यतः वेदानुसार कर्म करके पाप कर्म से छूट जाने का ज्ञान दिया है। अतः मनुष्य पाप करने की कभी भी इच्छा ना करे क्योंकि जब पाप कर्म छूट जाते हैं तभी मनुष्य ईश्वर को प्राप्त होता है और मुक्ति पाकर ईश्वर के संग सदा आनन्द में रहता है। जन्म–मरण से छूट जाता है। पाप और पुण्य के विषय में ऋषियों ने यही बताया है कि वेदानुसार कर्म करना पुण्य है और वेद–विरुद्ध कर्म करना पाप है। परन्तु ***वेदानुसार कर्म हम तभी कर सकते हैं जब हम विद्वानों से वेद सुनकर ईश्वर को जानेंगे और ईश्वर के बताए मार्ग और कर्मों को समझेंगे।*** इसलिए मनुष्य का, जन्म लेने के पश्चात् यही धर्म (कर्तव्य) है कि वह बचपन से वेद–विद्या सुननी प्रारम्भ कर दे।

मनुष्य इस संसार में वैदिक निष्काम कर्म करता हुआ ही सौ वर्ष जीने की इच्छा करे अन्यथा वेद–विरुद्ध कर्म करता हुआ वह अल्पायु में ही बीमारियों से जूझता हुआ शरीर छोड़ देता है। अतः मनुष्य आलस्य को छोड़कर, वेदों में कही परमात्मा की आज्ञा को मानकर, शुभ कर्म करता हुआ और अशुभ कर्मों को छोड़ता हुआ, युक्त आहार–विहार से अल्पायु का विनाश करे और सौ वर्ष की आयु को प्राप्त करे। यह मेरा व्यक्तिगत विचार है कि वेद के प्रचारक गली–गली ये पोस्टर लगाएँ कि ***जो मनुष्य परमेश्वर द्वारा कहे पुरुषार्थ करने की इच्छा को तोड़ेगा वह कभी भी सुख नहीं पाएगा।*** VVV

Swami Ram Swarup 'Yogacharya'

Medical Science in Atharvaved

Since the time Vedic knowledge was neglected in Indian culture, then right from the children to the old persons, several types of diseases have been generated and demolished the golden lives of public. Hardly, one can see glow on the faces of people now.

If Vedic culture had been followed at present, as was followed in the ancient times (satyug), its continuity could not be broken uptil now. Our people would have enjoyed long, illfree, happy life. In this connection, I want to draw your attention towards ***Atharvaved Mantra 3/5/6*** wherein it has been preached that Oh! Man, pray to God- that ***"Oh! God, by controlling all my senses, especially maintaining Brahmacharya, may I become everyone's dear/loving person and I too preach them the Vedic knowledge.*** Those who are learned, maintain the human-body well, those who are hard-working, having control over the activities of mind, may become my worshippers and praise me. My Brahmacharya makes me a learned person and makes my human-body beautiful and gives long, happy, healthy life."

So, in the absence of such type of Vedic knowledge, almost all people donot know about themselves as to why this beautiful body has been provided by God to us. So, to gain happy, illfree, long life, we will have to ***"Revert back to Vedas".*** Otherwise in the absence of Vedic knowledge, over-sighting the eternal culture, the human-being has brought his own downfall.